ओ३म्

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।।

विश्ववारा संस्कृति

मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका

संरक्षक
श्री आनंद चौहान, श्री सुधीर सिंघल
प्रधान
श्री मनोहर लाल सरदाना

प्रबंध संपादक
आर्य कै. अशोक गुलाटी
संपादक
आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार
सह संपादक
आचार्य ओमकार शास्त्री

प्रकाशक और मुद्रक
स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक डॉ. जयेन्द्र कुमार द्वारा वत्स ऑफसेट, मुद्दा हाऊस, सी-ब्लॉक, बारात घर, चौड़ा रघुनाथपुर, सेक्टर-22, नोएडा से मुद्रित एवं आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित किया।

पंजीकरण संख्या : UPMUL/2016/76974

घोषणा पत्र संख्या : 153/2016-17
Date of Dispatch 12&13 Every Month

मूल्य

एक प्रति	: 20/-	वार्षिक	: 250/-
पांच वर्ष	: 1100/-	आजीवन	: 2500/-

विदेश में वार्षिक शुल्क : 3100/-

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	विषय	पृष्ठ
1.	संपादकीय : दिल्ली का दंगा...	2
2.	धर्मरहित राजनीति पतन का...	3
3.	मदर टेरेसा : क्या संत थीं...	4-5
4.	ईशोपनिषद...	6
5.	कोरोना वायरस : वैदिक संस्कृति	7
6.	वेदों का महत्व एवं उनका...	8-9
7.	ईश्वर का वास्तविक स्वरूप	10
8.	महापुरुषों को नमन	12-13
9.	लिव-इन-रिलेशनशिप...	14-15
10.	समाज में सकारात्मक चिंतन...	21
11.	समाचार-सूचनाएं	22
12.	सुस्वास्थ्य : फूलों का जादुई असर...	24

पाठकवृंद : कृपया स्वयं समाज एवं राष्ट्र के उत्थान के लिए 'विश्ववारा संस्कृति' के आजीवन सदस्य बनकर जीवन पथ को पुष्पित, प्रफुल्लित और प्रमुदित करें। आपका चित्र पत्रिका में प्रकाशित होगा। आपके बहुमूल्य सुझावों का हम स्वागत करते हैं।

लेखकवृंद से अनुरोध है कि रचना मौलिक एवं अप्रकाशित हो, रचना का लेखन स्पष्ट और सुपाठ्य हो। दो प्रतियां उस रचनाकार को भेज दी जाएगी, जिनकी रचना प्रकाशित हुई है।

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	:	5100 रुपये
कवर पृष्ठ नं.-2	:	3100 रुपये
कवर पृष्ठ नं.-3	:	2500 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	:	1000 रुपये
आधा पृष्ठ अंदर	:	600 रुपये

'विश्ववारा संस्कृति' में सभी पद अवैतनिक हैं। प्रकाशित विचारों से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र गौतमबुद्धनगर होगा।

संपादकीय कार्यालय

आर्य समाज, बी-69,
सेक्टर-33, नोएडा- 201301
गौतमबुद्धनगर, (उ.प्र.)
दूरभाष : 0120-2505731,
9871798221, 7011279734
 # 9899349304
captakg21@yahoo.co.in

Web : www.noidaaryasamaj.org, E-mail : info.aryasamajnoida33@gmail.com

संपादकीय...

।।ओ३म्।।

दिल्ली का दंगा

दंगा करना, झगड़ा करना, करवाना, मारपीट, पत्थरबाजी ये सब कहीं भी हो सकते हैं या करवाये जा सकते हैं। राजनेताओं की बात करें तो आजकल वह नेता ज्यादा बड़ा राष्ट्र भक्त नजर आता है जो दंगा भड़काने में आगे नजर आये। नेताओं को आग लगाकर रोटी सेंकने की पुरानी आदत है। सबसे बड़ी विडम्बना यह है कि इस देश में नेता राजनीति में सेवा के लिए नहीं आता अपितु वह सत्ता सुख के भोग के लिए राजनीति को अपनाता है, और जब सत्ता सुख का खून उसके मुंह लग जाता है तब वह किसी भी कीमत पर उसे छोड़ना नहीं चाहता। अपनी सत्ता तथा अस्तित्व को बचाने के लिए दंगा करवाने तथा भड़काने से भी बाज नहीं आता।

आज दिल्ली ऐसे ही नेताओं की बलि चढ़ गयी। लोगों के दिलों में साम्प्रदायिकता की आग भड़काकर उनको मरने के लिए सड़क पर छोड़ दिया। अपने आप सुरक्षा के घेरे में सुरक्षित घरों में बैठे रहे। सैकड़ों लोग घायल हो गये अनेकों मारे गये तथा अरबों-खरबों की सम्पत्ति जलकर खाक हो गयी। दुनिया के इतिहास को उठाकर देखिये सबसे ज्यादा हिंसा मजहब तथा कथित धर्म के नाम पर हुए हैं, उतने शायद किसी और कारण से नहीं। आज हमारे देश में साम्प्रदायिकता का उबाल आया हुआ है। साम्प्रदायिकता बयानबाजी कर लोग अपने आपको राष्ट्र का हितैषी राष्ट्र भक्त सिद्ध करने में लगे हुए हैं। किंतु वे यह भूल रहे हैं कि दुनिया में ऐसे कितने युद्ध लड़े जा चुके हैं, कितना रक्तपात हुआ है, आखिर में समझौते ही होते हैं। समझौते समझदारी विकसित करते हैं, समझदार लोग विचार भिन्नता के बाद भी साथ-साथ रह सकते हैं। आजकल सोशल मीडिया पर हर आदमी बहती गंगा में हाथ धो रहा है, बिना यह सोचे-समझे कि इसका परिणाम क्या होगा।

नफरत, घृणा, क्रोध ये सब विनाशकारी होते हैं। प्रेम तथा अहिंसा का मार्ग ही सर्वश्रेष्ठ है। वर्तमान समय में मानव धर्म को पीछे छोड़कर लोभ-लालच के चक्कर में पड़ गया है। धन कमाने की जिद ने उसे मानो पागल बना दिया है। सच्चा मनुष्य वही है जो सत्य, अहिंसा और प्रेम के मार्ग पर चलता है। सफलता भी ऐसे मानव के कदम चूमती है। इंद्रियों और मन पर संयम रखना भी चाहिए। आवेश में आकर किए गए कार्य हमेशा हानि पहुंचाते हैं। धर्म को अंगीकार करना है तो उस ईश्वर की प्रार्थना करनी होगी जिसने हमें मानव जीवन दिया। संयम धारण कर उसका ध्यान लगाना होगा। जो मानव सच्चे मन से ध्यान लगाएगा उसे सफलता अवश्य मिलेगी।

■ आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार

लोगों के दिलों में साम्प्रदायिकता की आग भड़काकर उनको मरने के लिए सड़क पर छोड़ दिया। अपने आप सुरक्षा के घेरे में सुरक्षित घरों में बैठे रहे। सैकड़ों लोग घायल हो गये अनेकों मारे गये तथा अरबों-खरबों की सम्पत्ति जलकर खाक हो गयी। दुनिया के इतिहास को उठाकर देखिये सबसे ज्यादा हिंसा मजहब तथा कथित धर्म के नाम पर हुए हैं, उतने शायद किसी और कारण से नहीं। आज हमारे देश में साम्प्रदायिकता का उबाल आया हुआ है। साम्प्रदायिकता बयानबाजी कर लोग अपने आपको राष्ट्र का हितैषी राष्ट्र भक्त सिद्ध करने में लगे हुए हैं। किंतु वे यह भूल रहे हैं कि दुनिया में ऐसे कितने युद्ध लड़े जा चुके हैं, कितना रक्तपात हुआ है, आखिर में समझौते ही होते हैं। समझौते समझदारी विकसित करते हैं, समझदार लोग विचार भिन्नता के बाद भी साथ-साथ रह सकते हैं। आजकल सोशल मीडिया पर हर आदमी बहती गंगा में हाथ धो रहा है, बिना यह सोचे-समझे कि इसका परिणाम क्या होगा। नफरत, घृणा, क्रोध ये सब विनाशकारी होते हैं। प्रेम तथा अहिंसा का मार्ग ही सर्वश्रेष्ठ है। वर्तमान समय में मानव धर्म को पीछे छोड़कर लोभ-लालच के चक्कर में पड़ गया है। धन कमाने की जिद ने उसे मानो पागल बना दिया है। सच्चा मनुष्य वही है जो सत्य, अहिंसा और प्रेम के मार्ग पर चलता है। सफलता भी ऐसे मानव के कदम चूमती है। आवेश में आकर किए गए कार्य हमेशा हानि पहुंचाते हैं।

धर्मरहित राजनीति पतन का कारण है

भूपेश आर्य

प्राचीन काल में हमने देखा कि जितने भी धर्म का पालन करने वाले राजा हुए, उनका राज्य काफी समय तक चला और सुदृढ़ता युक्त चला। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, योगीराज श्रीकृष्णजी, महाराज दशरथ, महाराज अश्वपति, राजा विक्रमादित्य, महाराज युधिष्ठिर आदि अनेक धार्मिक राजाओं ने अपने राज्य को धर्म की मर्यादा में रहकर चलाया और इसी कारण वे सफल हुए।

जो राजा धार्मिक होगा, वह प्रजा को भी धार्मिक बनाने में सफल होगा और प्रजा जब राजा की सहानुभूति प्राप्त करेगी तो प्रजा भी राजा से खुश रहेगी क्योंकि धार्मिक राजा स्वयं दु:ख उठाकर भी प्रजा को दु:खी नहीं होने देगा। धार्मिक राजा का ही राज्य फलता-फूलता है। उदाहरण के लिये, मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम ने धर्म का पालन किया इसलिए उनका राज्य दीर्घकालीन चला जबकि रावण ने धर्म छोड़कर राज्य किया, परिणाम सबके सामने है। रावण परिवार सहित मारा गया। दूसरी तरफ इतिहास की ओर देखें, दुर्योधन ने धर्म को छोड़कर राज्य चलाना चाहा, परन्तु अंत में परिजनों सहित मारा गया। घर में कोई पानी देने वाला भी नहीं बचा। उधर महाराज युधिष्ठिर ने धर्म का पालन करके चक्रवर्ती राजा बने और दीर्घकालीन राज्य किया। ऐसे ही इतिहास के और भी प्रमाण हैं, जिनसे सिद्ध होता है कि राजनीति की रीढ़ धर्म है। धर्म के बिना राजनीति लंगड़ी व अंधी हो जाती है।

वेद, महाभारत, मनुस्मृति, विदुर-नीति आदि अनेक ग्रंथों में यही बात को विशेषता दी गई है कि राजा को धर्म का भी पालन करना चाहिए। अथर्ववेद में कहा है, लूटने वाला हमारा शासक न हो?

ओ३म् रक्षा माकिर्नो अघशंस ईशत मा नो दुशंस ईशत। मा नो अद्य गवां स्तेनो मावीनां वृक ईशत।। (अथर्ववेद)

अर्थ- हे ईश्वर आप हमारी रक्षा करें। कोई भी दुष्ट दुराचारी अन्यायकारी हम पर शासन न करे (अर्थात् हमारा राजा धार्मिक, सदाचारी हो)। हमारी वाणी पर पाबंदी लगानेवाला, हम किसानों से हमारी भूमि छीननेवाला तथा हम पशु पालकों से हमारे गौ आदि पशु छीननेवाला व्यक्ति हमारा शासक न बने। भेड़िया बकरियों का राजा न हो।

उपरोक्त वेद-मंत्र में बताया है कि किस प्रकार के व्यक्ति को अपना शासक नहीं बनने देना चाहिए। यानी किस प्रकार के व्यक्ति को हमें वोट नहीं देनी चाहिए। मनुस्मृति के ये श्लोक भी बताते हैं कि राजा को धार्मिक होना चाहिए?

यत्र धर्मो ह्यधर्मेण सत्यं यत्रानृतेन च। हन्यते प्रेक्षमाणानां हतास्तत्र सभासदः। मनु.

जिस सभा में अधर्म से धर्म, असत्य से सत्य सब सभासदों के देखते हुए मारा जाता है उस सभा में सब मरे हुए के समान हैं। जानो उनमें कोई भी नहीं जीता।

यस्य स्तेनः पुरे नास्ति नान्यस्त्रीगो न दुष्टवाक्। न साहसिकदण्डघ्नौ स राजा शक्रलोकभाक्।। मनु.

जिस राजा के राज्य में न चोर, न परस्त्रीगामी, न दुष्ट वचन बोलने हारा न साहसिक (दुष्ट) डाकू, और न दंडघ्न अर्थात राजा की आज्ञा का भंग करने वाला है वह राजा अतीव श्रेष्ठ है। छान्दोग्य उपनिषद् में राजा अश्वपति अपनी धार्मिकता का प्रमाण देते हुए कहते हैं?

न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपः। नानाहिताग्निर्नाविद्वान् न स्वैरी स्वैरिणी कुतः।। (छान्दोग्य उपनिषद्)

अर्थ : कैकेय देश का राजा अश्वपति घोषणा करता है-मेरे राज्य में कोई चोर नहीं है। कोई गरीब और कंजूस नहीं है। कोई शराबी नहीं है। कोई ऐसा घर नहीं है जहां हवन (अग्निहोत्र) न होता हो। कोई मूर्ख नहीं है। कोई व्यभिचारी नहीं है तो फिर व्यभिचारिणी कैसे हो सकती है? ऐसा उसी राजा के राज्य में ही सम्भव है जो स्वयं बुराईयों से परे हो और धार्मिक हो। जब राजा धार्मिक होगा तो प्रजा भी धार्मिक होगी, दुराचारी नहीं होगी? यथा राजा तथा प्रजा?

राज्ञि धर्मिणि धर्मिष्ठाः पापे पापाः समे समाः। राजानमनुवर्तन्ते यथा राजा तथा प्रजाः।। (मनुस्मृति)

अर्थ : यदि राजा यानी शासकवर्ग सदाचारी और न्यायकारी होंगे तो प्रजा भी सदाचारी और न्यायकारी बन जाती है। यदि शासकवर्ग दुराचारी हो तो प्रजा भी दुराचारी बन जाती है। प्रजा तो अपने शासकों के पीछे ही चलती है।

मनुस्मति के इस श्लोक से स्पष्ट है कि राजा यदि सदाचारी व न्यायकारी अर्थात् धर्म का पालन करने वाला है तो प्रजा भी धर्म का पालन करेगी। और यदि राजा दुराचारी, अन्यायकारी है अर्थात् धर्मयुक्त आचरण नहीं करता तो प्रजा भी धर्म से हीन दुराचार में प्रवृत्त होगी, तो फिर जब राजा, प्रजा ही अधार्मिक हो गये तो राष्ट्र के पतन में संदेह ही क्या है?

।। ओ३म् ।। ○○

मदर टेरेसा : क्या संत थीं...

डॉ. विवेक आर्य

मदर टेरेसा! यह नाम सुनते ही किसी के भी मस्तिष्क में एक नीले बॉर्डर वाली, सर तक ढकी हुई, सफेद साड़ी पहनी हुई, वृद्ध महिला का झुरियों भरा चेहरा उभरता है, जिसने मानवता की सच्ची सेवा के लिए अपना मूल देश त्याग दिया। जो गरीबों की हमदर्द बनकर उभरी और जिसने हजारों अनाथों, दीनों और निराश्रयों को सहारा दिया। जिसे उसकी सेवा के लिए विश्व शांति का नोबल पुरस्कार मिला था। मदर टेरेसा के विषय में आपको यह सब मालूम है क्योंकि आपको यही बताया गया हैं। परन्तु इस सिक्के के दूसरे पहलु से आप अभी अनभिज्ञ है। उसी से अवगत करवाना ही मुख्य उद्देश्य है।

सत्य अगर कड़वा भी हो तो भी वह सत्य ही कहलाता है। भारत में कार्य करने वाली ईसाई संस्थाओं का एक चेहरा अगर सेवा है तो दूसरा असली चेहरा प्रलोभन, लोभ, लालच, भय और दबाव से धर्मांतरण भी करना हैं। इससे तो यही प्रतीत होता है की जो भी सेवा कार्य मिशनरी द्वारा किया जा रहा है उसका मूल उद्देश्य ईसा मसीह के लिए भेड़ों की संख्या बढ़ाना है। संत वही होता है जो पक्षपात रहित एवं जिसका उद्देश्य मानवता की भलाई है। ईसाई मिशनरीयों का पक्षपात इसी से समझ में आता है की वह केवल उन्हीं गरीबों की सेवा करना चाहती है, जो ईसाई मत को ग्रहण कर लें।

मदर टेरेसा का जन्म 26 अगस्त 1910 को स्कोप्जे, मेसेडोनिया में हुआ था और बारह वर्ष की आयु में उन्हें अहसास हुआ कि 'उन्हें ईश्वर बुला रहा है'। 24 मई 1931 को वे कलकत्ता आई और यहीं की होकर रह गई। कोलकाता आने पर धन की उगाही करने के लिए मदर टेरेसा ने अपनी मार्केटिंग आरम्भ करी। उन्होंने कोलकाता को गरीबों का शहर के रूप में चर्चित कर और खुद को उनकी सेवा करने वाली के रूप में चर्चित कर अंतराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त करी। वे कुछ ही वर्षों में 'दया की मूर्ति, मानवता की सेविका, बेसहारा और गरीबों की मसीहा, लार्जर दैन लाईफ़' वाली छवि से प्रसिद्ध हो गई। हालांकि उन पर हमेशा वेटिकन की मदद और मिशनरीज ऑफ़ चैरिटी की मदद से 'धर्म परिवर्तन' का आरोप तो लगता रहा। गौरतलब तथ्य यह है कि इनमें से अधिकतर आरोप पश्चिम की प्रेस या ईसाई पत्रकारों आदि ने ही किये थे। ना कि किसी हिन्दू संगठन ने, जिससे संदेह और भी गहरा हो जाता है। अपने देश के गरीब ईसाईयों की सेवा करने के स्थान पर मदर टेरेसा को भारत के गरीब गैर ईसाईयों के उत्थान में अधिक रुचि होना क्या ईशारा करता है? पाठक स्वयं निर्णय कर सकते है।

मदर टेरेसा को समूचे विश्व से, कई ज्ञात और अज्ञात स्रोतों से बड़ी-बड़ी धनराशियां दान के तौर पर मिलती थीं। सबसे बड़ी बात यह थी की मदर ने कभी इस विषय में सोचने का कष्ट नहीं किया की उनके धनदाता की आय का स्रोत एवं प्रतिष्ठा कैसी थी। उदाहरण के लिए अमेरिका के एक बड़े प्रकाशक रॉबर्ट मैक्सवैल, जिन्होंने कर्मचारियों की भविष्यनिधि फंड्स में 450 मिलियन

सत्य अगर कड़वा भी हो तो भी वह सत्य ही कहलाता है। भारत में कार्य करने वाली ईसाई संस्थाओं का एक चेहरा अगर सेवा है तो दूसरा असली चेहरा प्रलोभन, लोभ, लालच, भय और दबाव से धर्मांतरण भी करना हैं। इससे तो यही प्रतीत होता है की जो भी सेवा कार्य मिशनरी द्वारा किया जा रहा है उसका मूल उद्देश्य ईसा मसीह के लिए भेड़ों की संख्या बढ़ाना है। संत वही होता है जो पक्षपात रहित एवं जिसका उद्देश्य मानवता की भलाई है। ईसाई मिशनरीयों का पक्षपात इसी से समझ में आता है की वह केवल उन्हीं गरीबों की सेवा करना चाहती है, जो ईसाई मत को ग्रहण कर ले। मदर टेरेसा का जन्म 26 अगस्त 1910 को स्कोप्जे, मेसेडोनिया में हुआ था और बारह वर्ष की आयु में उन्हें अहसास हुआ कि 'उन्हें ईश्वर बुला रहा है'। 24 मई 1931 को वे कलकत्ता आईं और यहीं की होकर रह गईं। कोलकाता आने पर धन की उगाही करने के लिए मदर टेरेसा ने अपनी मार्केटिंग आरम्भ करी। उन्होंने कोलकाता को गरीबों का शहर के रूप में चर्चित कर और खुद को उनकी सेवा करने वाली के रूप में चर्चित कर अंतराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त करी। वे कुछ ही वर्षों में 'दया की मूर्ति, मानवता की सेविका, बेसहारा और गरीबों की मसीहा, लार्जर दैन लाईफ़' वाली छवि से प्रसिद्ध हो गई। हालांकि उन पर हमेशा वेटिकन की मदद और मिशनरीज ऑफ़ चैरिटी की मदद से 'धर्म परिवर्तन' का आरोप तो लगता रहा। गौरतलब तथ्य यह है कि इनमें से अधिकतर आरोप पश्चिम की प्रेस या ईसाई पत्रकारों आदि ने ही किये थे। ना कि किसी हिन्दू संगठन ने, जिससे संदेह और भी गहरा हो जाता है।

पाउंड का घोटाला किया। उसने मदर टेरेसा को 1.25 मिलियन डॉलर का चंदा दिया। मदर टेरेसा मैक्सवैल की पृष्ठभूमि को जानती थी। हैती के तानाशाह जीन क्लाऊड डुवालिये ने मदर टेरेसा को सम्मानित करने को बुलाया। मदर टेरेसा कोलकाता से हैती सम्मान लेने गईं। जिस व्यक्ति ने हैती का भविष्य बिगाड़ कर रख दिया। गरीबों पर जमकर अत्याचार किये और देश को लूटा। टेरेसा ने उसको 'गरीबों को प्यार करने वाला' कहकर तारीफ़ों के पुल बांधे थे। मदर टेरेसा को चार्ल्स कीटिंग से 1.25 मिलियन डॉलर का चंदा मिला था। ये कीटिंग महाशय वही हैं जिन्होंने 'कीटिंग सेविंग्स एंड लोंस' नामक कम्पनी 1980 में बनाई थी और आम जनता और मध्यमवर्ग को लाखों डालर का चूना लगाने के बाद उसे जेल हुई थी। अदालत में सुनवाई के दौरान मदर टेरेसा ने जज से कीटिंग को माफ़ करने की अपील की थी। उस वक्त जज ने उनसे कहा कि जो पैसा कीटिंग ने गबन किया है क्या वे उसे जनता को लौटा सकती हैं? ताकि निम्न-मध्यमवर्ग के हजारों लोगों को कुछ राहत मिल सके, लेकिन तब वे चुप्पी साध गईं।

यह दान किस स्तर तक था- मदर टेरेसा की मृत्यु के समय सुसान शील्ड्स को न्यूयॉर्क बैंक में पचास मिलियन डालर की रकम जमा मिली। सुसान शील्ड्स वही हैं जिन्होंने मदर टेरेसा के साथ सहायक के रूप में नौ साल तक काम किया। सुसान ही चैरिटी में आये हुए दान और चेकों का हिसाब-किताब रखती थी। जो लाखों रुपया गरीबों और दीन-हीनों की सेवा में लगाया जाना था। वह न्यूयॉर्क के बैंक में यूं ही फ़ालतू पड़ा था। दान से मिलने वाले पैसे का प्रयोग सेवा कार्य में शायद ही होता होगा इसे कोलकाता में रहने वाले अरूप चटर्जी ने अपनी पुस्तक 'द फाइनल वर्डिक्ट' में लिखते हैं ब्रिटेन की प्रसिद्ध मेडिकल पत्रिका Lancet के सम्पादक डॉ. रॉबिन फ़ॉक्स ने 1991 में एक बार मदर के कलकत्ता स्थित चैरिटी अस्पतालों का दौरा किया था। उन्होंने पाया कि बच्चों के लिये साधारण 'अनल्जेसिक दवाईयां' तक वहां उपलब्ध नहीं थी और न ही 'स्टर्लाइज्ड सिरिंज' का उपयोग हो रहा था। जब इस बारे में मदर से पूछा गया तो उन्होंने कहा कि 'ये बच्चे सिर्फ़ मेरी प्रार्थना से ही ठीक हो जायेंगे।' मिशनरी में भर्ती हुए आश्रितों की हालत भी इतने धन मिलने के उपरांत भी उनकी स्थिति कोई बेहतर नहीं थी। मिशनरी की नन दूसरों के लिए दवा से अधिक प्रार्थना में विश्वास रखती थी। जबकि खुद कोलकाता के महंगे से महंगे अस्पताल में अपना इलाज करातीं थीं। मिशनरी की एम्बुलेंस मरीजों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने का कार्य करती थी। यही कारण था की मदर टेरेसा की मृत्यु के समय कोलकाता निवासी उनकी शवयात्रा में न के बराबर शामिल हुए थे।

मदर टेरेसा अपने रूढ़िवादी विचारों के लिए सदा चर्चित रहीं। बांग्लादेश युद्ध के दौरान लगभग साढ़े चार लाख महिलायें बेघर हुईं और भागकर कोलकाता आईं। उनमें से अधिकतर के साथ बलात्कार हुआ था जिसके कारण वह गर्भवती थीं। मदर टेरेसा ने उन महिलाओं के गर्भपात का विरोध किया और कहा था कि 'गर्भपात कैथोलिक परम्पराओं के विरुद्ध है और इन औरतों की प्रेग्नेन्सी एक 'पवित्र आशीर्वाद' है। मदर टेरेसा की इस कारण जमकर आलोचना हुई थी। मदर टेरेसा ने इंदिरा गांधी की आपातकाल लगाने के लिये तारीफ़ की थी और कहा कि 'आपातकाल लगाने से लोग खुश हो गये हैं और बेरोजगारी की समस्या हल हो गई है।' गांधी परिवार ने उन्हें इस बड़ाई के लिए 'भारत रत्न' का सम्मान देकर उनका 'ऋण' उतारा। भोपाल गैस त्रासदी भारत की सबसे बड़ी औद्योगिक दुर्घटना है, जिसमें सरकारी तौर पर 4000 से अधिक लोग मारे गये और लाखों लोग अन्य बीमारियों से प्रभावित हुए। उस वक्त मदर टेरेसा ताबड़तोड़ कलकत्ता से भोपाल आईं, किसलिये? क्या प्रभावितों की मदद करने? जी नहीं, बल्कि यह अनुरोध करने कि यूनियन कार्बाईड के मैनेजमेंट को माफ़ कर दिया जाना चाहिये, और अन्ततः वही हुआ भी, वारेन एंडरसन ने अपनी बाकी की जिंदगी अमेरिका में आराम से बिताई। भारत सरकार हमेशा की तरह किसी को सजा दिलवा पाना तो दूर, ठीक से मुकदमा तक नहीं कायम कर पाई।

अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पत्रकार क्रिस्टोफ़र हिचेन्स ने 1994 में एक डॉक्यूमेंट्री बनाई थी, जिसमें मदर टेरेसा के सभी क्रियाकलापों पर विस्तार से रोशनी डाली गई थी। बाद में यह फ़िल्म ब्रिटेन के चैनल-फ़ोर पर प्रदर्शित हुई और इसने काफ़ी लोकप्रियता अर्जित की। बाद में अपने कोलकाता प्रवास के अनुभव पर उन्होंने एक किताब भी लिखी 'हैल्स एन्जेल' (नर्क की परी)। इसमें उन्होंने कहा है कि कैथोलिक समुदाय विश्व का सबसे ताकतवर समुदाय है। जिन्हें पोप नियंत्रित करते हैं, चैरिटी चलाना, मिशनरियां चलाना, धर्म परिवर्तन आदि इनके मुख्य काम हैं। जाहिर है कि मदर टेरेसा को टेम्पलटन सम्मान, नोबल सम्मान, मानद अमेरिकी नागरिकता जैसे कई सम्मान इसी कारण से मिले। ○○

ओ३म् पूषन्नेकर्वे यम सूर्य प्राजापत्म व्यूह रश्मीन् समूह। तेजो यत्ते रूपं कल्याणतमं तत्ते पश्यामि योऽसावसौ पुरुषः सोऽहमस्मि॥ ईशोपनिषद -16

शकुन्तला सेतिया

अर्थ : (पूषन्)- हे संसार के पोषक (एकर्षे)- अद्वितीय ऋषि, यम सबका नियमन करने वाले सूर्य- प्रकाशक व प्रेरक प्राजापत्य- प्रजाओं के पालक व रक्षक, रश्मीन - किरणों को (व्यूह)- विस्तृत कीजिए। और (समूह)-समेटिये, जिससे अपका (यत्ते)- जो अत्यंत कत्याणकारी, (रूपम्) रूप है तत्-उसे (पश्यामि)-देख सकूं। यः जो (असौ असौ) एक-एक प्राणी में, पुरुष- परमात्मा है वह अहम् सर्वव्यापक है। उपनिषद् ब्रह्मविद्या के ग्रंथ है। हमें यह स्मरण रखना है कि ब्रह्मविद्या का मूल तो वेद ही है। ईशोपनिषद तो बहुत सूक्ष्म अंतर के साथ यजुर्वेद का लगभग चालीसवां अध्याय ही है। प्रस्तुत मंत्र तो ईशोपनिषद का सोलहवां मंत्र है। यह मंत्र यजुर्वेद में नहीं है।परमपिता परमात्मा ने अत्यंत कृपा करके हमें यह मानव शरीर प्रदान किया है। हमें यह मानव शरीर क्यों मिला? अथवा इस मानव जीवन का लक्ष्य क्या है? वेदानुसार समस्त सांसारिक दुखों से छूटकर परमानन्द की प्राप्ति अर्थात् ईश्वर को प्राप्त करना ही मानव जीवन का लक्ष्य है।

पूषन : वह परम प्रभु चराचर जगत् का पालनकर्ता है। हम सारा दिन काम करते हैं-थकान होती है, शारीरिक शक्ति का ह्रास होता है। उसकी पूर्ति हम भोजन से करते हैं। घी, दूध, शाक-सब्जी तथा अन्न, जल, फल-फूल आदि पदार्थ भोजन के द्वारा हमारे शरीर में प्रविष्ठ होकर हमारा पोषण करते हैं। इन सब पदार्थों की सृष्टि करने वाला परमपिता परमात्मा है। अतः वही हमारे स्थूल शरीर का पोषक है। सूक्ष्म शरीर भी प्रकृति में व्याप्त सूक्ष्म तत्वों द्वारा पोषित होता है। इस प्रकार ब्रह्माण्ड का पोषण करने वाले ईश्वर के द्वारा ही स्थूल और सूक्ष्म दोनों शरीरों का पोषण होता है। वहां हमारे मन में एक प्रश्न उठ सकता है कि यह सब खाद्य पदार्थ किसान उत्पन्न करता है, हमारे माता-पिता अथवा हम स्वयं अपनी कमाई से उन पदार्थों को खरीदकर प्रयोग में लाते हैं तो ईश्वर को पालक और पोषक मानना कहीं तक युक्ति संगत है? थोड़ा सा सूक्ष्मता से विचार करने पर इस प्रश्न का उत्तर मिल जाता है।

ठीक है किसान ने इसे वीजा, उगाया और पकाया। उसने बीज बोये, बीज कहां से आये? पहली वाली फसल से। पहली वाली फसल कैसे उगी? उसके पहले के बीजों से। यह क्रम जब पीछे जाते जाते सृष्टि की उत्पत्ति तक पहुंचा तब बीज कहां से अये? इसका सीधा सा उत्तर है कि पहली फसल ईश्वर के सामर्थ्य से भूमि में उत्पन्न हुई और विकास के कालक्रम से हम तक पहुंची। अतः यह निर्विवाद सत्य है कि ईश्वर ही हम सबका पशु-पक्षी, कीट-पतंग पूरे ब्रह्माण्ड का वही पालक पोषक है। जब मनुष्य के हृदय में यह बात अंकित हो जाती है अर्थात् पूर्ण निश्चय हो जाता है कि संसार का पोषण करने वाला ईश्वर के सिवा और कोई नहीं तो वह पोषण संबंधी सभी संधनों और उनके कारण पैदा होने वाले विकारों से मुक्त हो जाता है। एकर्षि- अद्वितीय ऋषि-ऋषिर्दर्शनात् (यास्क) जो देखता है वह ऋषि- देखते तो हम सब हैं- किंतु चर्म चक्षुओं से देखने वाला ऋषि नहीं-दृष्टा नहीं। आत्मा दृष्टा है- जो आत्मा से देखे वह ऋषि कहाता है। किंतु सर्वोत्कृष्ट दृष्टा और ज्ञानी ईश्वर है। ईश्वर से अधिक ज्ञान और किसी को नहीं। जिससे अधिक ज्ञान हो ही नहीं सकता, वह ज्ञान की सीमा है, वही ईश्वर है।

यम : नियमन करने वाली सत्ता का नाम यम है। सृष्टि के कण-कण में व्याप्त होकर वह चराचर पदार्थों का नियमन कर रहा है। सृष्टि का निर्माण-पालन और संहार सब कुछ ईश्वरीय नियमों के अंतर्गत अबाध गति से प्रवाहित हो हा है। इस प्रकार समस्त सृष्टि को नियमबद्ध करने में ईश्वर का नाम यम है। मात्र मृत्यु के देवता का नहीं। हां उसके नियमों के अंतर्गत मृत्यु का भी महत्वपूर्ण स्थान है। संसार में भी शासन को सुव्यवस्थित करने के लिए अनेकों नियम बनते हैं। जिनके लिए नियम बनते हैं वे तो उन नियमों का उल्लंघन करते ही है, जो बनाते हैं वे भी उल्लंघन करने में उनसे पीछे नहीं है। किंतु ईश्वर के बनाये नियम सार्वभौम तथा सार्वकालिक होते हैं। वे सब पर निष्पक्ष भाव से समान रूप से लागू होते हैं। उसके बनाये नियमों में

कभी संशोधन, परिवर्तन अथवा परिबर्द्धन नहीं होता। ऐसा इसलिए कि वह सर्वज्ञ है।

प्रजापति : प्रस्तुत मंत्र में परमात्मा का एक संबोधन 'प्राजापत्यं' है। प्रजापति शब्द राजा और प्रजा के संबंध का द्योतक है। प्रजा का पालन पोषण और रक्षण करना राजा का धर्म है। 'प्रजापति प्रजानां सृष्टा' वह प्रजाओं सृजन करने, मरणोपरांत जन्म देने वाला है। इसलिए वह राजाओं का अथर्ववेद के अनुसार के इन प्रजाओं को उत्पन्न करता और उन्हें सर्वोत्तम गुणों से विभूषित करता वही प्रजापति है। ऐसा प्रजापति किसी नगर विशेष के विशेष स्थान में नहीं बल्कि जड़-चेतन के भीतर अंतर्यामी रूप से व्याप्त होकर रहता है। जो समस्त जगत को उत्पन्न कर स्वयं सदा अजन्मा रहता है, उसे ही उसासक और धीर जन ध्याते और जन्ममरण के बंधन से मुक्त हो जाते हैं।

सूर्य : वह प्रकाश स्वरूप होने से सूर्य है। प्राणाधार होने से सूर्य है। सृष्टि उत्पादक, प्रकाशक और प्रेरक होने से वह वह सूर्य है। इस प्रकार से प्रभु की स्तुति करके उसके स्वरूप को जानकर भक्त का मन उसके दर्शनों के लिए लालायित हो उठा है और साधक भक्त पुकार उठा है। प्रभो अपनी तेजोमय किरणों को विस्तृत कीजिए। जिन विशेषणों से हमने उसकी स्तुति की, पूजन, पालक, महाज्ञानी, सर्वज्ञ ऋषि और 'यम' वह मृत्यु के द्वारा सृष्टि का नियमन करता है। मृत्यु न हो तो संसार में पैर रखने का भी स्थान न हो आदि-आदि।

ये सभी उसकी तेजोमय किरणें ही तो हैं, जिससे उपासक को अपने प्रभु के स्वरूप का परिचय मिला। अब वह प्रभुदर्शन को बहुत उतावला हो रहा है और पुकार कर रहा है कि प्रभों संसारिक प्रलोभनों और मायाजाल को समेटिये ताकि मैं आपके सर्वोत्तम मंगलमय स्वरूप के दर्शन कर सकूं। उसके सारे रूप मंगलमय है। प्रेरक का रूप तो मंगलमय है। क्योंकि प्रभु प्रेरणा से उपासक का जीवन ही बदल जाता है और वह प्रभु का प्यारा बन जाता है। साधक उपासना काल और व्यवहार काल में भी प्रेरणा प्राप्त करने में समर्थ हो जाता है। मैं उसका दर्शन पा लूं उसे मित्र बना लूं यही उसकी कामना है। हां मित्रता के लिए गुणों की समानता अपरिहार्य है अर्थात् अनिवार्य है।

(स्वामी विद्यानन्द सरस्वती के लेख पर आधारित)

कोरोना वायरस : वैदिक संस्कृति

कोरोना वायरस के कारणों पर शोध से चीन ने जो निष्कर्ष निकाला है वे परोक्ष रूप में भारतीय वैदिक संस्कृति का अनुमोदन करता है। हमारे प्राचीन ऋषियों ने वेदों के अधार पर शवों को अग्नि में जलाकर दाह संस्कार करने का विधान बनाया है। चीन ने घोषणा की है कि अगर शवों को जमीन में गाड देंगे, तो उनके शरीर में जो कोरोना वायरस या अन्य वायरस व बैक्टीरिया होते हैं वो जमीन में मिल जाएंगे और ये वायरस और बैक्टीरिया कभी नष्ट नहीं होंगे, बल्कि जमीन में ही फैलेंगे और जल तथा वायु को प्रदूषित करेंगे। शवों को जला देने से आग के जरिये वायरस और बैक्टीरिया सदा-सदा के लिए खत्म हो जाते हैं। इसीलिए चीन ने घोषणा की है कि जितने भी लोग कोरोना वायरस से पीड़ित होकर मर रहे हैं, उन सभी का अंतिम संस्कार जलाकर ही किया जायेगा। वेद और वैदिक सहित्य में शाकाहार को ही मनुष्य का भोजन कहा गया है। मांसाहार रोगों को बढ़ाने वाला महापाप की श्रेणी में आता है। मांसाहार कितना खतरनाक होता है, इस बात की जानकारी चीन को ही नहीं सारे विश्व को कोराना वायरस के कारण पता चला है। जिस प्राणियों को मांसाहारी खाते है वे कई प्रकार की घातक बीमारियों से पीढ़ित हो सकते हैं तथा उनके सेवन से मनुष्य उन बीमारियों की चपेट में आ सकता है यह बात कोरोना वायरस ने सिद्ध कर दिया है।

हमारे ऋषियों ने यज्ञ को सर्वश्रेष्ठ कर्म कहा है क्योंकि शुद्ध जल और वायु मनुष्य के लिए परम अवशयक है। अग्नि में डाला गया घी और सामग्री वातावरण में मौजूद वायरस और बैक्टीरिया को भी समाप्त करता हैं। चीन अब भारत में अपनाई जाने वाली यज्ञ पद्धत्ति से वायरस मिटने पर विचार कर रहा है। क्योंकि मांसाहार त्यागकर वायरस से कुछ सीमा तक तो बच सकते है लेकिन जो वायरस वायुमंडल में फैल चुके है उनको समाप्त करने का उपाय यज्ञ ही है। वैदिक संस्कृति में आपसी मेल-जोल में शारीरिक स्पर्श जैसे हाथ मिलाना या गले मिलना या चूमना आदि का कोई स्थान नहीं है। एक-दूसरे से मिलने पर हाथ जोड़कर नमस्ते करने का आदेश है। यह नियम हमारे ऋषियों की वैज्ञानिक व स्वास्थ्य की दृष्टि से उच्च कोटि व सोच को दर्शाता है। अन्य अभिवादन के ढंग छूत रोग कारक है इसलिए हाथ जोड़कर नमस्ते करना ही स्वास्थ्य के लिए उचित है। आज चीन में लोगों को कोरोना वायरस से बचने के लिए शारीरिक स्पर्श से बचने के निर्देश दिये गये है। यह सब निर्देश वैदिक संस्कृति का ही समर्थन करते है। ■■

वेदों का महत्व एवं उनका अध्ययन अध्यापन मानवमात्र का कर्तव्य

मनमोहन कुमार आर्य
देहरादून, उत्तराखंड

वेदों का नाम प्रायः सभी लोगों ने सुना हुआ है परन्तु आर्य व हिन्दू भी वेदों के बारे में अनेक तथ्यों को नहीं जानते। हमारा सौभाग्य है कि हम ऋषि दयानन्द जी से परिचित हैं। हमने ऋषि दयानन्द के जीवन एवं कार्यों को जानने सहित उनके सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, आर्याभिविनय, संस्कारविधि सहित वेदभाष्य आदि ग्रंथों को देखा है। ऋषि दयानन्द जी के यह सभी ग्रन्थ हमारे पास हैं और हमने इनका अध्ययन भी किया है।

सत्यार्थप्रकाश ग्रंथ का महत्व इस कारण से है कि यह हमें वेदों से जोड़ता है और वेदों के विषय में सत्य रहस्यों को बताता व जनाता है। वेदों को यथार्थरूप में जानना प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य एवं धर्म है। जो वेदों के सत्यस्वरूप को जानने का पुरुषार्थ नहीं करता और वेदों का अध्ययन कर अपने जीवन व आचरण का सुधार नहीं करता, हमें लगता है कि वह मनुष्य होकर भी अधूरा मनुष्य है। उसने ईश्वर प्रदत्त अपने मनुष्य जन्म को सार्थक सिद्ध नहीं किया है। विचार करें कि यदि उनकी संतानें उन्हें ठीक से न तो जाने तथा न पहचाने उन्हें आपकी व आपके पूर्वजों की विरासत का ज्ञान भी न हो और वह आपकी व उस सबकी उपेक्षा करते हों तो आपका अपनी उन सन्तानों के प्रति कैसा व्यवहार होगा? ऐसी ही कुछ स्थिति हमारी व संसार के 99 प्रतिशत लोगों की हमें दिख पड़ती हैं। हम ईश्वर के पुत्र होकर भी अपने उस पिता ईश्वर को जानते नहीं है। उसने हमारे कल्याण के लिये सृष्टि के आरम्भ में चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा के माध्यम से जो ज्ञान दिया था उसे भी हम न तो जानते हैं और न ही उसका अपने हित में लाभ नही उठाते हैं।

वेदों का अध्ययन करने से हमें यह भी ज्ञात होता है कि हम जीवात्मा हैं जो पूर्वजन्म के अपने शुभाशुभ कर्मों का फल भोगने के लिये ईश्वर द्वारा व उसकी व्यवस्था से संसार में जन्म लेती हैं। हमें कभी अवसर ही नहीं मिलता कि हम यह विचार करें कि क्या हम अनादि व नित्य हैं या आदि, जन्म-मृत्यु धर्मा तथा उत्पत्ति व नाश धर्मा जीवात्मा हैं या कुछ और। हम यह भी नहीं जानते कि हमारा यह प्रथम जन्म है या इससे पूर्व भी हमारा अस्तित्व था और हम मनुष्य या किसी अन्य योनि में जीवन यापन करते थे? इस जन्म में हमारी मृत्यु दिन व रात्रि के चक्र के समान सुनिश्चत है। क्या हमारा मृत्यु के बाद पुनः जन्म होगा? यदि होगा तो वह मनुष्य का ही होगा या किसी अन्य प्राणी योनि में भी हो सकता है? हमारे इस जन्म व पुनर्जन्म का आधार व सिद्धान्त अथवा नियम क्या हैं? कम से कम इन प्रश्नों के उत्तर तो प्रत्येक मनुष्य को चाहे वह हिन्दू, आर्य, ईसाई, मुसलमान, बौद्ध व जैन धर्म का अनुयायी ही क्यों न हो, उसे पता होने चाहियें। आश्चर्य है कि आज की शिक्षित युवा पीढ़ी इन आवश्यक प्रश्नों की उपेक्षा करती है। यदि युवा पीढ़ी के

वेदों को यथार्थरूप में जानना प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य एवं धर्म है। जो वेदों के सत्यस्वरूप को जानने का पुरुषार्थ नहीं करता और वेदों का अध्ययन कर अपने जीवन व आचरण का सुधार नहीं करता, हमें लगता है कि वह मनुष्य होकर भी अधूरा मनुष्य है। उसने ईश्वर प्रदत्त अपने मनुष्य जन्म को सार्थक सिद्ध नहीं किया है। विचार करें कि यदि उनकी संतानें उन्हें ठीक से न तो जाने तथा न पहचाने उन्हें आपकी व आपके पूर्वजों की विरासत का ज्ञान भी न हो और वह आपकी व उस सबकी उपेक्षा करते हों तो आपका अपनी उन सन्तानों के प्रति कैसा व्यवहार होगा? ऐसी ही कुछ स्थिति हमारी व संसार के 99 प्रतिशत लोगों की हमें दिख पड़ती हैं। हम ईश्वर के पुत्र होकर भी अपने उस पिता ईश्वर को जानते नहीं है। उसने हमारे कल्याण के लिये सृष्टि के आरम्भ में चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा के माध्यम से जो ज्ञान दिया था उसे भी हम न तो जानते हैं और न ही उसका अपने हित में लाभ नही उठाते हैं। वेदों का अध्ययन करने से हमें यह भी ज्ञात होता है कि हम जीवात्मा हैं जो पूर्वजन्म के अपने शुभाशुभ कर्मों का फल भोगने के लिये ईश्वर द्वारा व उसकी व्यवस्था से संसार में जन्म लेती हैं।

जीवन व उसकी दिनचर्या पर विचार किया जाये तो विदित होता है कि वह स्कूली शिक्षा प्राप्त कर कुछ व्यवसाय करना चाहती है जहां से उसे पर्याप्त आय हो जिससे वह अपना जीवन सुख व सुविधाओं सहित व्यतीत कर सकें। ऐसा ही हम भारत व विश्व के लोगों को करते हुए देखते हैं। कुछ मत-मतान्तर के लोग अपने अनुयायियों को अपनी जनसंख्या बढ़ाने के उपाय बताते हैं जिनमें एक उपाय वह धर्मांतरण को भी वैध मानते हैं। वह अपने मत की मान्यताओं पर विचार कर उसकी सत्यता की परीक्षा नहीं करते। सभी मतों में अविद्या विद्यमान है। इसका प्रकाश ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश में किया है।

मत-मतान्तरों के लोग अपने मतों के सिद्धान्तों को सत्य पर स्थिर करना नहीं चाहते। वह जो चला आ रहा है उसी को आगे बढ़ाने में विश्वास रखते हैं। इसके पीछे उनकी गहरी अविद्या युक्त बुद्धि व संस्कार ही प्रतीत होते हैं। सोचिये! यदि हमारे वैज्ञानिक भी अपने पूर्ववर्ती वैज्ञानिकों की बातों को अक्षरश: सत्य मानते और उनकी मान्यताओं में सुधार, परिवर्तन व संशोधन न करते तो आज ज्ञान व विज्ञान की क्या स्थिति होती। हम अनुमान व अनुभव करते हैं कि वैज्ञानिक यदि पुराने वैज्ञानिकों की अपूर्ण व अल्पज्ञान व अल्प विद्या की बातों में सुधार न करते तो जो स्थिति देश व समाज की होती वही स्थिति मत-मतान्तरों द्वारा अपने मत-मतान्तरों की मान्यताओं व सिद्धान्तों सहित परम्पराओं की परीक्षा कर उनका सत्य सिद्धान्तों के आधार पर संशोधन न करने के कारण बनी हुई है। देश में एकमात्र ऋषि दयानन्द ने इस समस्या को जाना व समझा था तथा अपने व अन्यों के मत-मतान्तरों की अविद्यायुक्त बातों पर विचार कर उन्हें त्याज्य माना था। उन्होंने अविद्या का त्याग करने सहित विद्या व सत्य ज्ञान की खोज भी की थी।

उन्होंने जिस सत्य व मानव हितकारी बातों को हितकर स्वीकार किया था, उसे देश व समाज के सम्मुख प्रस्तुत कर लोगों से उसे स्वीकार, ग्रहण व धारण करने की अपील की थी। वह मानते थे कि मनुष्य का जन्म सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करने के लिये हुआ है और सत्य का अनुसंधान, सत्य का ग्रहण और सत्य को धारण करना ही मनुष्य व मनुष्य जाति का एकमात्र उन्नति का कारण होता है। यह सिद्धान्त हमारे सामने हैं। सभी इसे सत्य स्वीकार करेंगे परन्तु मत-मतान्तर के लोग इसे स्वीकार करने को तैयार नहीं होते हैं। यह आज के युग का महा प्रश्न व समस्या है? इससे बड़ा आश्चर्य नहीं हो सकता। अपने हित व अहित की चिंता न कर वह आंखें बंद कर मत-मतान्तरों की अविद्यायुक्त बातों को स्वीकार व आचरण करते हैं जिसका परिणाम वेद के सिद्धान्तों के अनुसार सुखद कदापि न होकर परलोक में दु:ख व अकल्याण करने वाला होता है। वेदों से ही हमें सत्य ज्ञान की प्राप्ति होती है, अत: हमारा कर्तव्य व धर्म है कि हम वेदों के सत्य सिद्धान्तों को जानें व उनका आचरण करें जिससे हमारा कल्याण व उन्नति हो।

वेद वह ज्ञान है जो सच्चिदानन्द-स्वरूप, सर्वज्ञ, निराकार तथा सर्वव्यापक परमात्मा ने सृष्टि की आदि में चार पवित्रतम आत्माओं वा अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा ऋषियों की आत्माओं में प्रतिष्ठित किया था। ईश्वर की प्रेरणा से ही उन चार ऋषियों ने चार वेद ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद का ज्ञान ब्रह्मा ऋषि को दिया था। ब्रह्माजी से इन चार वेदों के अध्ययन व अध्यापन की परम्परा आरम्भ हुई। इससे पूर्व संसार में न तो कोई भाषा व ज्ञान था, न कोई पुस्तक और न ही कोई आचार्य। उस समय केवल अमैथुनी सृष्टि में उत्पन्न ऋषि एवं युवावस्था वाले स्त्री व पुरुष ही थे। परमात्मा ने चार ऋषियों को चारों वेदों की भाषा व उसके अर्थ भी जनाये व बताये थे। उन चार ऋषियों ने ब्रह्माजी को वेदभाषा का उच्चारण एवं सत्य वेदार्थ बताया था। ➲➲

प्रेरक वचन

- संध्या स्वयं एक शस्त्र है और बड़ा शस्त्र है। जैसे सूर्य की रश्मियों से रात्रि की सेनाएं स्वयं ही छिन्न-भिन्न हो जाती है, उसी प्रकार पाप के दल इस शस्त्र के सामने नष्ट-भ्रष्ट हो जाते हैं। इन मंत्रों की अद्भुत शक्ति से, इनके अर्थों पर विचार करने से जीवन के आदर्श उच्च हो जाते हैं।
- हमें दूसरों की उन्नति देखकर प्रसन्न होना चाहिए।
- वेदों के स्वाध्याय का यह अर्थ नहीं कि वह वैदिक शब्दों की छानबीन करता रहे, अपितु वह मंत्रों का स्वाध्याय करके, उनके साधारण अर्थों को भी समझे और उन्हें बारम्बार दुहराकर अपनी आत्मा में वैदिक भाव को प्रविष्ट करें।

ईश्वर का वास्तविक स्वरूप

आचार्य ओमकार शास्त्री
उपाचार्य, आर्ष गुरुकुल, नोएडा

ईश्वर के स्वरूप के संबंध में अनेकों विचार मन में उत्पन्न होते हैं कि वह कैसा है? कहां रहता है? कैसे उसको जाना जा सकता है? आदि। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ईश्वर के संबंध में लिखते हैं- य: इष्टे सर्व ऐश्वर्यवान वर्तते स: ईश्वर:। अर्थात् जो हमारा इष्ट है और समस्त ऐश्वर्य जिसमें है वही ईश्वर है।

आर्यसमाज के द्वितीय नियम में- ईश्वर, सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर-अमर और सृष्टि-कर्ता है। परमात्मा के स्वरूप का वर्णन महर्षि द्वारा स्पष्ट कर दिया गया है कि हम उसकी भक्ति करें और उसकी आज्ञा पालन करें तभी सुख प्राप्ति होगी।

परमात्मा के अनेकों नाम हैं लेकिन परमात्मा का मुख्य और निज नाम ओ३म् है। 'ओ३म्' शब्द में अ,उ,म् तीन शब्द हैं। 'अ' स्वर है जो कि वर्णमाला का प्रथम वर्ण है। 'अ' के बाद ही समस्त वर्णमाला की शुरुआत होती है। इसलिए हमने 'अ' को परमात्मा माना। इसके बाद दूसरा वर्ण 'उ' आता है। 'उ' जीवात्मा माना है। जैसे 'उ' अ के बाद आता है। ऐसे परमात्मा के बाद जीवात्मा का स्थान आता है। तीसरा वर्ण है- 'म्' और म् आधा है इसी प्रकार 'म्' को प्रकृति माना। जैसे 'म्' आधा है उसी प्रकार प्रकृति अधूरी है। जीवात्मा और परमात्मा के बिना।

स्पष्ट कहा जा सकता है- जैसे 'म्' प्रकृति के सानिध्य में आता है 'मु' बन जाता है, इसी प्रकार जीवात्मा प्रकृति के सानिध्य में आने पर जीवात्मा की दशा होती है। यदि यह 'अ' (परमात्मा) के सानिध्य में जब जीवात्मा (उ) आ जाता है तो 'ओ' बनता है और 'ओ' किसी के नीचे नहीं आता है। इसी प्रकार 'म्' और 'अ' मिलकर 'म' पूर्ण हो जाता है। जिस प्रकार 'म' में अ व्याप्त है उसी प्रकार सृष्टि के कण-कण में परमात्मा समाया हुआ है। मनुष्य यदि सुख चाहता है तो परमात्मा की शरण में जाना होगा। ईशोपनिषद में मंत्र कहता है-

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यांञ्जगत्। तेन त्यक्तेनभुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्॥ (ई शो.-1)

अर्थात्: यह सब जो कुछ इस जगत में चराचर वस्तु है ईश्वर से आच्छादित है। उसी ईश्वर के दिये हुए पदार्थों से भोगकर किसी के भी धन का लालच मत कर। ईशोपनिषद के अनुसार सिद्ध होता है कि मनुष्य के लिए समस्त सुख सुविधाएं परमात्मा द्वारा प्रदान की गई है। परमात्मा द्वारा प्रदत्त सुविधाओं में मनुष्य को संतुष्ट होना चाहिए लेकिन मनुष्य है कि उसे संतुष्ट होने की आवश्यकता नहीं है ऐसा प्रतीत होता है। क्योंकि वह परमात्मा को केवल दुख में याद करता है सुख में नहीं। सुख में मनुष्य अपने आपको सब कुछ मान लेता है। जबकि उपनिषद् कहता है कि हे मनुष्य! कर्मों को करता हुआ सौ वर्ष तक जीने की इच्छा कर। इससे उत्तम और श्रेष्ठ कोई मार्ग नहीं है।

जब-जब हमारे सामने कुछ प्रश्न उपस्थित होते हैं, तब-तब ईश्वर के मानने की आवश्यकता पड़ती है। यह संसार कैसे बना, इसकी बनाने की सामग्री क्या है, इसका बनाने वाला कौन है, संसार में जितने भी चेतन प्राणी दृष्टिगत हो रहे हैं वे कहां से प्रकट हो रहे हैं, संसार में उनकी सत्ता का आधार व औचित्य क्या है, जो आये हैं बने हैं वे कहां जा रहे हैं, उनका जाना उनकी अपनी इच्छा से है या वे इन सब परिस्थितियों के लिए किसी और के आधीन हैं, इन प्राणियों के जीवन में होने वाले सुख-दुःख प्राणियों की अपनी इच्छा का परिणाम है या ये भी किसी से नियन्त्रित हैं? इसके विकल्प में जितने समाधान हो सकते हैं, उनमें प्रथम है- संसार की दृश्यमान वस्तुएं इस संसार का कारण हो सकती हैं। इसमें दो विकल्प हैं- वस्तु पृथक-पृथक रूप में कारण है या इन सबका मेल कारण है? यदि ये अपने-आप संसार को नहीं बना सकते तो संसार का चेतन दिखने वाला मनुष्य इस संसार का रचयिता हो सकता है। यदि वह समर्थ है तो उसके सुख-दुःख का वह स्वयं नियन्त्रक क्यों नहीं है? इस प्रकार का चिन्तन पुरातन काल से चला आ रहा है और आज भी ये प्रश्न वैसे ही हमारे सामने खड़े हैं। ईश्वर होता तो एक पदार्थ होता और पदार्थों को जाना जाता है, अतः ईश्वर को भी जान लिया जाता। मनुष्य के पास जानने के साधनों के रूप में उसकी ज्ञानेन्द्रियां हैं, जिनसे संसार के सभी पदार्थ जाने जाते हैं।

गुणाः पूजास्थानम्

डॉ. शिव प्रसाद शर्मा

'तेजसा हि न वयः समीक्ष्यते'

अस्मिन् संसारे यावन्तोऽपि प्राणिनस्तिष्ठन्ति, ते सर्वेऽपि स्वसम्मानं पूजाञ्चाभिलषन्ति, किंतु के पूर्जाहा इति ते जानन्ति। केषांचिन्मते यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनो गुणज्ञः लोके। केचन तु विद्यामेव पूजायाः कारणं वदन्ति॥

उक्तञ्च–

विद्वान् सर्वत्र पूज्यते अथवा योऽनूचानः स मे महान्

किंतु लोके विद्यामधीत्यापि मूर्खाः भवन्ति जना लोकाचारविवर्जिताः। यथा पंचतंत्रे चतुर्णां मूर्खपंडितानां कथा प्राप्यते। उक्तञ्च–

अपि शास्त्रेषु कुशलाः लोकाचारविवर्जिताः।
सर्वे ते हास्यतां यान्ति यथा ते मूर्खपंडिताः॥

अतः विद्यापति न केवला पूर्जाहा। अनेनैव प्रकारेण केचन चिङ्गम् पूजार्हम् मन्यन्ते, यदपि न समीचीनम्। सामान्यतया शक्तिमत्वात् सबलत्वात् सर्वकार्यकर्तृत्वाच्च पुरुष एव राजारूपेण, स्वामिरूपेण, ईश्वररूपेण वा लोके पूज्यते, किंतु भारते नैतादृशी व्यवस्था।

अत्र स्त्रीपुरुषयोः समानरूपेण समकालं पूजा भवति, चिह्नविशेषोऽपि नास्ति पूजायाः कारणम्। वस्तुतस्तु पूजायाःकारणं गुण एव। लिंगयुक्तोऽपि राजा यदि गुणरहितः स्यात् तदा प्रजां तं राज्यात् च्युतं करोति। अत एव कौटिल्यो नन्दं सिंहासनात् अपातयत् अल्पप्रयासेनैव नन्दकुलमघातयच्च। रावणोऽपि अविवेकत्वादेव संघातितः, कंसोऽपि गुणविहीनत्वात् श्रीकृष्णेन व्यापादितः। एवमेव, केवलं वयोऽपि नास्ति पूजायाः कारणम्। अस्माकं राष्ट्रे वृद्धा, माता-पितरौ, गुरवः, कुलज्येष्ठाश्च पूज्यन्ते। तत्तु समीचीनमेव अनुभवाधिक्यात्। किंतु बालका अपि पूजनीयाः सन्त्यैन। बाल एव रामः सर्वैः महर्षिभिः पूजितः। बालको ध्रुवः सर्वेषां सप्तर्षिणाम् अग्रगण्योऽद्यापि तिष्ठति। अभिमन्युकथा अद्यापि जनैः सादरं स्मर्यते। अतः 'गुणाः पूजास्थानम् न च लिङ्गं न च वयः' इत्युक्तिः सत्यमेव।

पूजावसरे पूज्यस्य कुलं नापेक्ष्यते। यस्मिन् कस्मिन् कुलेऽपि उत्पन्नो गुणों लोके पूज्यो भवति। महात्मा विदुरः दासीपुत्र आसीत्। कर्णः सूतपालितरासीत्। महात्मागान्धिर्वैश्यकुले उत्पन्नोऽपि लोके प्रतिष्ठामवाप।

उक्तञ्च–

यस्य कस्य प्रसूतोऽपि गुणवान् पूज्यते नरः।
धनुर्वंश विशुद्धोऽपि निर्गुणः किं करिष्यति॥

लोके गुणी पुत्रस्य जननेन माता पितरौ स्वजन्मसाफल्यं मन्यन्ते। अन्यथा तयोर्जीवनं व्यर्थमेव भवति। उक्तञ्च–

को धन्यो बहुभिः पुत्रैः कुशूलाढकपूरणैः।
वरमेकः गुणी पुत्रो यत्र विश्रूयते पिता॥

तथा च–

वरमेको गुणी पुत्रो न च मूर्खशतैरपि।
एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति न च तारा शतैरपि॥

किं बहुनाऽऽलापेन, गुणत्वादेव कोकिलः समाद्रियते न वायसः। शुकोऽपि गुणत्वात् पाल्यते जनैः। गुणिनः स्वधर्मं, स्वदेशं, स्वजातिञ्च रक्षन्ति। सदाचारं स्थापयन्ति सर्वषां हितानि च साधयन्ति। अतः नूनं गुणा एव पूजास्थानम्।

मानवसम्यतयाः मूलभूतादर्शः विश्वबंधुत्व एव विद्यते। अत्र परस्परं द्वेषादिकं विहाय सहयोगभावनया प्रेम्णा वस्तव्यम् , सर्वेषां प्राणिनां हिताय चिन्तनीयम् इयमेव भारतीया संस्कृतिरुद्घोषयन्ति। उक्तञ्च–

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे संतु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिदद्दुःखभाग्भवेत्॥

OO

आर्योद्देश्यरत्नमाला

- **स्तुति :** जो ईश्वर या किसी दूसरे पदार्थ के गुणज्ञान, कथन, श्रवण और सत्यभाषण करना है, वह स्तुति कहाती है।
- **स्तुति का फल :** जो गुणज्ञान आदि के करने से गुण वाले पदार्थों में प्रीति होती है, वह 'स्तुति का फल' कहाता है।
- **निंदा :** जो मिथ्याज्ञान, मिथ्याभाषण, झूठ में आग्रहादि क्रिया का नाम 'निन्दा' है कि जिससे गुण छोड़कर उनके स्थान में अवगुण लगाना होता है।
- **प्रार्थना :** अपने पूर्ण पुरुषार्थ के उपरान्त उत्तम कर्मों की सिद्धि के लिए परमेश्वर व किसी सामर्थ्य वाले मनुष्य का सहाय लेने को 'प्रार्थन' कहते हैं।
- **प्रार्थना का फल :** अभिमान-नाश आत्मा में आर्द्रता, गुण-ग्रहण में पुरुषार्थ और अत्यन्त प्रीति का होना, 'प्रार्थना का फल' है।

रक्त साक्षी पंडित लेखराम आर्य

बलिदान दिवस
शत्-शत् नमन

पंडित लेखराम आर्य (1858–1897), आर्य समाज के प्रमुख कार्यकर्ता एवं प्रचारक थे। उन्होंने अपना सारा जीवन आर्य समाज के प्रचार प्रसार में लगा दिया। वे अहमदिया मुस्लिम समुदाय के नेता मिर्जा गुलाम अहमद से शास्त्रार्थ एवं उसके दुस्प्रचारों के खंडन के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं। उनका संदेश था कि तहरीर (लेखन) और तकरीर (शास्त्रार्थ) का काम बंद नहीं होना चाहिए। पंडित लेखराम इतिहास की उन महान हस्तियों में शामिल हैं जिन्होंने धर्म की बलिवेदी पर प्राण न्योछावर कर दिए। जीवन के अंतिम क्षण तक आप वैदिक धर्म की रक्षा में लगे रहे। पंडित लेखराम ने अपने प्राणों की परवाह न करते हुए हिंदुओं को धर्म परिवर्तन से रोका व शुद्धि अभियान के प्रणेता बने। लेखराम का जन्म 8 चैत्र, संवत् 1915 (1858 ई.) को झेलम जिला के तहसील चकवाल के सैदपुर गांव में हुआ था। उनके पूर्वज महाराजा रणजीत सिंह की फौज में थे। उनके पिता का नाम तारा सिंह एवं माता का नाम भाग भरी था। स्वामी दयानंद का जीवनचरित् लिखने के उद्देश्य से उनके जीवन संबंधी घटनाएं इकट्ठी करने के सिलसिले में उन्हें भारत के बहुसंख्यक स्थानों का दौरा करना पड़ा। इस कारण उनका नाम 'आर्य मुसाफिर' पड़ गया। पं लेखराम हिंदुओं को मुसलमान होने से बचाते थे। एक कट्टर मुसलमान ने 3 मार्च सन् 1897 को ईद के दिन, 'शुद्धि' कराने के बहाने, धोखे से लाहौर में उनकी हत्या कर डाली। उस समय वह महर्षि दयानन्द का चरित्र लिख रहे थे इसलिए उन्हें रक्त साक्षी कहा जाता है। उनका कहना था आर्यसमाज से तहरीर और तकरीर का कार्य बंद नहीं होना चाहिए।

पुण्यतिथि
शत्-शत् नमन

पं. गुरुदत्त विद्यार्थी

पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी (26 अप्रैल 1864–1890), महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य शिष्य एवं कालान्तर में आर्यसमाज के प्रमुख नेता थे। उनकी गिनती आर्य समाज के पांच प्रमुख नेताओं में होती है। 26 वर्ष की अल्पायु में ही उनका देहान्त हो गया किन्तु उतने ही समय में उन्होने अपनी विद्वता की छाप छोड़ी और अनेकानेक विद्वतापूर्ण ग्रन्थों की रचना की। अद्भुत प्रतिभा, अपूर्व विद्वत्ता एवं गम्भीर वक्तृत्व-कला के धनी पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी का जन्म 26 अप्रैल 1864 को मुल्तान के प्रसिद्ध 'वीर सरदाना' कुल में हुआ था। आपके पिता लाला रामकृष्ण फारसी के विद्वान थे। आप पंजाब के शिक्षा विभाग में अध्यापक थे। विशिष्ट मेधा एवं सीखने की उत्कृट लगन के कारण वे अपने साथियों में बिल्कुल अनूठे थे। किशोरावस्था में ही उनका हिन्दी, उर्दू, अरबी एवं फारसी पर अच्छा अधिकार हो गया था तथा उसी समय उन्होंने 'द बाइबिल इन इण्डिया' तथा 'ग्रीस इन इण्डिया' जैसे बड़े-बड़े ग्रन्थ पढ़ लिये। कॉलेज के द्वितीय वर्ष तक उन्होंने चार्ल्स ब्रेडले, जेरेमी बेन्थम, जॉन स्टुअर्ट मिल जैसे पाश्चात्य विचारकों के शतश: ग्रन्थ पढ़ लिये। वे मार्च, 1886 में पंजाब विश्वविद्यालय की एम.ए. में सर्वप्रथम रहे। तत्कालीन महान समाज सुधारक महर्षि दयानन्द के कार्यों से प्रभावित होकर उन्होंने 20 जून 1880 को आर्यसमाज की सदस्यता ग्रहण की। महात्मा हंसराज व लाला लाजपत राय उनके सहाध्यायी तथा मित्र थे। वह 'द रिजेनरेटर ऑफ आर्यावर्त' के सम्पादक रहे। 1884 में उन्होंने 'आर्यसमाज साइंस इन्स्टीट्यूशन' की स्थापना की। दीपावली (1883) के दिन, महाप्रयाण का आलिंगन करते हुए महर्षि दयानन्द के अन्तिम दर्शन ने गुरुदत्त की विचारधरा को पूर्णत: बदल दिया। अब वे पूर्ण आस्तिक एवं भारतीय संस्कृति एवं परम्परा के प्रबल समर्थक एवं उन्नायक बन गए। वे डीएवी के मंत्रदाता एवं सूत्रधार थे। पूरे भारत में साइंस के सीनियर प्रोफेसर नियुक्त होने वाले वह प्रथम भारतीय थे। उन्होंने कई गम्भीर ग्रन्थ लिखे, उपनिषदों का अनुवाद किया। उनके जीवन में उच्च आचरण, आध्यात्मिकता, विद्वत्ता व ईश्वरभक्ति का अद्भुत समन्वय था। उन्हें वेद और संस्कृत से इतना प्यार था कि वे प्राय: कहते थे कि- 'कितना अच्छा हो यदि मैं समस्त विदेशी शिक्षा को पूर्णतया भूल जाऊं तथा केवल विशुद्ध संस्कृतज्ञ बन सकूं।' 'वैदिक मैगजीन' के नाम से निकाले उनके रिसर्च जर्नल की ख्याति देश-विदेश में फैल गई। यदि वे दस वर्ष भी और जीवित रहते तो भारतीय संस्कृति का बौद्धिक साम्राज्य खड़ा कर देते। पर, विधि के विधान स्वरूप उन्होंने 19 मार्च 1890 को चिरयात्रा की तरफ प्रस्थान कर लिया। पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ ने 2000 ई. में उनके सम्मान में अपने रसायन विभाग के भवन का नाम 'पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी हाल' रखा है। आर्य समाज को उन पर नाज है। आर्ष गुरुकुल नोएडा के छात्रावास का नाम पं. गुरुदत्त विद्यार्थी के नाम पर है।

अमर शहीद भगत सिंह

बलिदान दिवस
शत्-शत् नमन

भगत सिंह (जन्म : 27 सितम्बर 1907, बलिदान : 23 मार्च 1931) भारत के एक प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी थे। भगतसिंह संधु जाट सिक्ख थे उन्होंने देश की आज़ादी के लिए जिस साहस के साथ शक्तिशाली ब्रिटिश सरकार का मुक़ाबला किया, वह भुलाया नहीं जा सकता। इन्होंने केन्द्रीय संसद में बम फेंककर भी भागने से मना कर दिया। जिसके फलस्वरूप इन्हें 23 मार्च 1931 को इनके दो अन्य साथियों, राजगुरु तथा सुखदेव के साथ फांसी पर लटका दिया गया। सारे देश ने उनके बलिदान को बड़ी गम्भीरता से याद किया। पहले लाहौर में साण्डर्स की हत्या और उसके बाद दिल्ली की केन्द्रीय असेम्बली में चन्द्रशेखर आजाद व पार्टी के अन्य सदस्यों के साथ बम-विस्फोट करके ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध खुले विद्रोह को बुलंदी प्रदान की। भगत सिंह को समाजवादी,वामपंथी और मार्क्सवादी विचारधारा में रुचि थी। अमृतसर में 13 अप्रैल 1919 को हुए जलियांवाला बाग हत्याकांड ने भगत सिंह की सोच पर गहरा प्रभाव डाला था। लाहौर के नेशनल कॉलेज़ की पढ़ाई छोड़कर भगत सिंह ने भारत की आज़ादी के लिये नौजवान भारत सभा की स्थापना की थी। काकोरी कांड में राम प्रसाद 'बिस्मिल' सहित 4 क्रांतिकारियों को फांसी व 16 अन्य को कारावास की सजाओं से भगत सिंह इतने अधिक उद्विग्न हुए कि पंडित चन्द्रशेखर आजाद के साथ उनकी पार्टी हिन्दुस्तान रिपब्लिकन ऐसोसिएशन से जुड गये और उसे एक नया नाम दिया हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन।

अमर शहीद शिवराम हरि राजगुरु

बलिदान दिवस
शत्-शत् नमन

शिवराम हरि राजगुरु (जन्म : 24 अगस्त 1908-बलिदान: 23 मार्च 1931) भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक प्रमुख क्रांतिकारी थे। इन्हें भगत सिंह और सुखदेव के साथ 23 मार्च 1931 को फांसी पर लटका दिया गया था। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में राजगुरु की शहादत एक महत्वपूर्ण घटना थी। शिवराम हरि राजगुरु का जन्म भाद्रपद के कृष्णपक्ष की त्रयोदशी सम्वत् 1965 में पुणे जिला के खेडा गांव में हुआ था। 6 वर्ष की आयु में पिता का निधन हो जाने से बहुत छोटी उम्र में ही ये वाराणसी विद्याध्ययन करने एवं संस्कृत सीखने आ गये थे। इन्होंने हिन्दू धर्म-ग्रंन्थों तथा वेदों का अध्ययन तो किया ही लघु सिद्धान्त कौमुदी जैसा क्लिष्ट ग्रन्थ बहुत कम आयु में कंठस्थ कर लिया था। इन्हें व्यायाम का बेहद शौक था और छत्रपति शिवाजी की छापामार युद्ध-शैली के बड़े प्रशंसक थे। वाराणसी में विद्याध्ययन करते हुए राजगुरु का सम्पर्क अनेक क्रांतिकारियों से हुआ। चन्द्रशेखर आजाद से इतने अधिक प्रभावित हुए कि उनकी पार्टी हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी से तत्काल जुड़ गये। आजाद की पार्टी के अन्दर इन्हें रघुनाथ के छद्म-नाम से जाना जाता था, राजगुरु के नाम से नहीं। पंडित चन्द्रशेखर आज़ाद, सरदार भगत सिंह और यतीन्द्रनाथ दास आदि क्रांतिकारी इनके अभिन्न मित्र थे।

अमर शहीद सुखदेव थापर

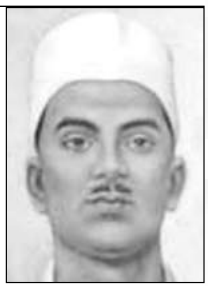

बलिदान दिवस
शत्-शत् नमन

सुखदेव थापर का जन्म पंजाब के शहर लायलपुर में श्रीयुत् रामलाल थापर व श्रीमती रल्ली देवी के घर विक्रमी सम्वत् 1964 के फाल्गुन मास में शुक्ल पक्ष सप्तमी तदनुसार 15 मई 1907 को अपरान्ह पौने ग्यारह बजे हुआ था। जन्म से तीन माह पूर्व ही पिता का स्वर्गवास हो जाने के कारण इनके ताऊ अचिन्तराम ने इनका पालन पोषण करने में इनकी माता को पूर्ण सहयोग किया। सुखदेव की तायी जी ने भी इन्हें अपने पुत्र की तरह पाला। लाला लाजपत राय की मौत का बदला लेने के लिये जब योजना बनी तो साण्डर्स का वध करने में इन्होंने भगत सिंह तथा राजगुरु का पूरा साथ दिया था। यही नहीं, सन् 1929 में जेल में कैदियों के साथ अमानवीय व्यवहार किये जाने के विरोध में राजनीतिक बंदियों द्वारा की गयी व्यापक हड़ताल में बढ़-चढ़कर भाग भी लिया था। गांधी-इर्विन समझौते के संदर्भ में इन्होंने एक खुला खत गांधी के नाम अंग्रेजी में लिखा था जिसमें इन्होंने महात्मा जी से कुछ गंभीर प्रश्न किये थे। उनका उत्तर यह मिला कि निर्धारित तिथि और समय से पूर्व जेल मैनुअल के नियमों को दरकिनार रखते हुए 23 मार्च 1931 को सायंकाल 7 बजे सुखदेव, राजगुरु और भगत सिंह तीनों को लाहौर सेंट्रल जेल में फांसी पर लटका कर मार डाला गया।

लिव-इन-रिलेशनशिप

डॉ. गंगा शरण आर्य (साहित्य सुमन)

भारतीय संस्कृति व सामाजिक जीवन मूल्य के विरुद्ध पाश्चात्य जगत का षड्यंत्र विपरीत लिंग के प्रति स्वाभाविक आकर्षण होता है पर आज लव का नशा युवाओं में इतना सर चढ़ गया है कि इसके प्रभाव में तथा विदेशी सभ्यता से प्रेरित होकर युवावर्ग विवाहपूर्व अल्पव्यस्क अवस्था में ही एक दूसरे के आगोश में जाकर अपनी संस्कृति की मर्यादाओं के साथ-साथ सामाजिक जीवन मूल्यों का मजाक बनाकर रख दिया है। मानो हमारे पूर्वज शायद लव करना जानते ही नहीं थे। यह लव के नशे का ही प्रभाव है कि आज लाखों लड़कियां कुंवारी मां बनकर अपनी नाजायज संतानों की भ्रूणहत्या का पाप भी कर रहीं हैं। बहुत जल्द ही जब लव का नशा समाप्त हो जाता है, तो स्थिति डाइवोर्स तक पहुंच जाती है। इन असफल शादियों की वजह से कितनी ही लड़कियों को आत्महत्या कर लेनी पड़ती है, कितनी ही लड़कियां तलाकशुदा जीवन जी कर अपने भाग्य पर आंसू बहा रही हैं।

हमारी संस्कृति में विवाह जीवन भर के लिये होता है न कि आज इसे छोड़ा, उसे पकड़ा, उसे छोड़ा और फिर तीसरे को पकड़ा। इसे जीवन भर प्रयोग करते रहते हैं। आज विदेशी संस्कृति के रंग में रंगकर हम अपने को इतने आधुनिक और नये समझने लगते हैं कि हमारे मां-बाप ही पुराने लगने लगते हैं। यहां तक कि इस लव की आंधी में अंधे होकर अपने माता-पिता तक को सदा के लिए मौत की नींद सुला देते हैं। इसके साथ ही 'लिव-इन-रिलेशनशिप' का चलन भी जोरों पर है जो पाश्चात्य का ही बिखरा हुआ बीज है। पश्चिमी सभ्यता की आंधी में भारतीय संस्कृति वस्त्रविहीन हो रही है। समाज में लिव-इन-रिलेशनशिप और समलैंगिकता की नई संस्कृति उभर रही है और एक नया वर्ग खुलकर सामने आ चुका है। समाज के कुछ भगवा पुरुष इसका विरोध कर रहे हैं और कुछ मुट्ठीभर लोग मानवधिकारों की आड़ में इनका समर्थन कर रहे हैं। समर्थकों का तर्क है अगर कोई शादी किए बिना एक छत के नीचे रहने का इच्छुक है या समलैंगिक जीवन बिताना चाहता है तो यह उसका निजी मामला है, कम से कम इन लोगों के अधिकार क्षेत्र में बाधा नहीं डाली जाए।

ऐसे लोगों को समाज को पथभ्रष्ट करने के नाम पर अपमानित या मानसिक रूप से प्रताड़ित नहीं किया जाना चाहिए। तर्क-वितर्क हो रहे हैं, लेकिन युवा पीढ़ी की स्वछंदता ने देश की सामाजिक व्यवस्था को हिला कर रख दिया है। परम्पराओं, मर्यादाओं और संस्कारों को जलाकर राख किया जा रहा है और पश्चिमी स्वरों में कामुकता की स्वर लहरियां गूंज रही हैं। और भारतीय सभ्यता गूंगी-बहरी विवश सी देख रही है। संस्कृति का कत्लगाह बनता जा रहा है। देश में अनैतिक संबंधों की बाढ़ आ रही है। पिछले कुछ वर्षों के दौरान सुप्रीम कोर्ट ने लिव-इन-रिलेशनशिप के मामले में कई ऐतिहासिक फैसले दिए हैं, बिना शादी किए युवक-युवतियों को रहने पर आपत्ति तो नहीं की लेकिन ऐसा करने वालों को सामाजिक एवं कानूनी अधिकारों द्वारा सुरक्षा प्रदान करने की कोशिश भी की है। दिल्ली हाईकोर्ट ने अपने एक फैसले में कहा था कि लिव-इन-रिलेशनशिप में शामिल पुरुष या महिला में कोई भी पार्टनर अपनी मर्जी से उससे अलग हो सकता है और ऐसी स्थिति में उसे कोई भी कानूनी कार्यवाही का सामना नहीं करना पड़ेगा। न ही दूसरा पार्टनर उस पर धोखा देने, विश्वासघात करने का आरोप लगा सकेगा। न्यायाधीश एस. एन. ढींगरा ने कहा था, 'लिव-इन-रिलेशनशिप अंदर जाओ (Walk In) और बाहर आ जाओ (Walk Out) संबंध हैं। इस संबंध में कोई दायित्व नहीं जुड़ा हुआ न ही सम्बद्ध पक्षों के मध्य कोई कानूनी मामला बनता है।

दिल्ली हाईकोर्ट ने लिव-इन-रिलेशन-शिप से बदलती पुरानी परम्पराओं और आधुनिकता के दौर में 'स्वार्थी संबंध' से अधिक महत्व ही नहीं दिया था, बल्कि ऐसा संबंध बताया था जिसमें बिना किसी जिम्मेदारी के प्रवेश किया जा सकता है और बाहर निकला जा सकता है। भारतीय संस्कारों में विवाह एक पवित्र रिश्ता है जो दो आत्माओं का मिलन होता है और दोनों ही जीवन भर साथ निभाने का संकल्प लेते हैं। विवाह का बंधन तोड़ना सरल है।

लिव-इन-रिलेशनशिप का प्रचलन महानगरों में बढ़ रहा है, जिसमें नौकरी पेशा पुरुष एवं महिलाएं एक-दूसरे की जरूरत को ध्यान में रखते हुए स्वेच्छा से एक साथ रहना शुरू करते हैं लेकिन आज का युवा वर्ग काफी उन्मुख है, लड़के-लड़कियों को शादी से पहले सैक्स करने में कोई आपत्ति

नहीं । यौन संबंधों से संबंधित आधुनिक कानूनों में महिलाओं का पलड़ा भारी रहता है। कभी-कभी महिलाएं कानूनों का अनुचित लाभ भी उठाती हैं। सुप्रीम कोर्ट ने ऐतिहासिक फैसला भी दिया था कि अगर शादी का वायदा करने के बाद लड़का लड़की की मर्जी से उसके साथ सैक्स करता है तो यह बलात्कार के दायरे में नहीं आता। अब सुप्रीम कोर्ट ने 'बिन फेरे हम तेरे' के मुद्दे पर एक महत्वपूर्ण फैसला दिया है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि लिव-इन-रिलेशनशिप में रह रही महिला को तब तक गुजारा भत्ता पाने का हक नहीं जब तक वह चार शर्त न पूरी करे। महज एक रात या एक हफ्ता एक साथ गुजारने से घरेलू संबंध कायम नहीं हो जाते। हर लिव-इन-रिलेशनशिप में ऐसा रिश्ता नहीं होता जो शादी जैसा हो और जिसमें 2005 एक्ट के तहत गुजारा भत्ता मान्य हो।

शीर्ष न्यायालय ने साफ कहा कि कोर्ट न तो कानून बना सकता है और न उसमें सुधार कर सकता है। संसद ने शादी जैसे रिश्ते की बात कही है लिव-इन-रिलेशनशिप की नहीं। कोर्ट व्याख्या करने के सिलसिले में संविधान की भाषा नहीं बदल सकता। सुप्रीम कोर्ट ने जो चार शर्ते रखी हैं उनमें यह महत्वपूर्ण है कि जो जोड़ा खुद को समाज के सामने पति-पत्नी की तरह पेश करे और उनकी शादी करने की उम्र हो। तथ्य यह है कि सरकार हो या अदालत कोई भी मानवीय संबंधों में आ चुके परिवर्तन को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं इसलिए विवाह जैसी परम्परा को बनाए रखना जरूरी है।

नए दर की नई कहानी तो लिखी जाए लेकिन सुखी पारिवारिक जीवन तभी हो सकता है जब मर्यादाओं का पालन हो। मर्यादाविहीन समाज राष्ट्र को गर्त में धकेल देगा। इसलिए शादियों के पवित्र बंधन के बिना लिव-इन-रिलेशनशिप को मान्यता देना जघन्य अपराध ही समझा जाना चाहिए। लिव-इन-रिलेशनशिप भारतीय संस्कृति की नजर में श्वान-वृत्ति अर्थात् कुत्तापन है। पाश्चात्य जगत के षड़यंत्र के इस भयावह परिणाम वाले रूप जिससे हमारी सभ्यता व संस्कृति का तार ही विनष्ट होने जा रहा है, का हम सबका मिलकर राष्ट्रीय स्तर पर एकजुट होकर विरोध करना चाहिए। ■■

वर्ण व्यवस्था

वर्ण व्यवस्था के बारे में अधकचरे और अधूरे ज्ञान के कारण ऐसा हो रहा है। वर्ण व्यवस्था कर्म और योग्यता पर आधारित है। कहा गया कि जन्म से सभी शूद्र होते हैं। माता-पिता, आचार्य-गुरु के द्वारा दिये गये नैमित्तिक ज्ञान के द्वारा मनुष्य ब्राह्मण, ठाकुर, वैश्य या शूद्र बनता है, मनुस्मृति और गीता आदि सभी ग्रंथों में यही व्यवस्था का विधान है, और सही अर्थों में चल भी रही है।

विदेशी मुगल आक्रांताओं और उसके बाद अंग्रेजों द्वारा हमें लड़ाने और तोड़ने की साजिश के तहत भेदभाव ऊंचनीच छुआ-छूत जैसी बीमारी फैली जिसके लिये बहुत कुछ जिम्मेदार हम लोग ही हैं। उच्च वर्ग द्वारा शूद्रों पर सैकड़ों साल अन्याय किया गया जिसके उन्मूलन के लिये भीमराव अम्बेडकर जी के संविधान को लागू किया गया, और आरक्षण की व्यवस्था दी गयी।

आज भी जो कर्म पर आधारित व्यवस्था ही चल रही है, किसी भी ब्राह्मण का पुत्र यदि एमबीबीएस न करे तो डाक्टर नहीं बनता। किसी भी चमार-पासी के पुत्र को एमबीबीएस कर लेने पर डाक्टर बनने से कोई रोक नहीं सकता। सेना में जाने के लिए जो योग्यता होगी उसके अनुसार ही भर्ती होगी चाहे ब्राह्मण ठाकुर वैश्य शूद्र हो या कोई भी।

मास्टर का लड़का मास्टर और डाक्टर का लड़का डाक्टर नहीं बनता! हां आज के परिप्रेक्ष्य में जन्मना जाति की दूषित और गलत प्रचलित व्यवस्था के कारण ब्राह्मण का पुत्र ब्राह्मण और शूद्र का शूद्र जरूर बन रहा है, जो एक दोषपूर्ण व्यवस्था है। ब्राह्मण अपने उच्च भाव के कारण बिना पढ़े खुद को ब्राह्मण ही समझने लगा है और शूद्र पढ़-लिखकर योग्य बन जाने के बाद भी खुद को शूद्र ही समझता है। यह व्यवस्था का दोष है, जन्मना जाति व्यवस्था के कारण! किन्तु सही अर्थों में व्यवस्था चल रही है कर्म पर आधारित! जो कि शाश्वत है व्यवहारिक है।

ब्राह्मण अपने उच्च भाव को छोड़ने को तैयार नहीं है और शूद्र अपने निम्न भाव को! भले ही ब्राम्हण चाय बेचे और शूद्र डीएम बन जाये। यह हमें तोड़ने का षडयंत्र है जिसके हम खुद जिम्मेदार हैं। शास्त्रों को गाली देने की नहीं उनको समझने और उनमें षडयंत्रकारी प्रक्षिप्त मिलावटी अर्थों और अंशों को हटाने की जरूरत है। तब समाज में फैली सभी विसंगतियां दूर होंगी। ■■

स्वामी श्रद्धानंद जी के साहस और गौरव का इतिहास चट कर गये वामपंथी..

अपना धन अपनी सम्पत्ति यहां तक की अपनी संतान को भी को राष्ट्र के लिए दान करने वाले इस वीर संन्यासी स्वामी श्रद्धानंद जी से भला कौन परिचित नहीं होगा! यदि कोई नहीं है तो उसे सुन लेना होगा क्योंकि इतिहास में ऐसे उदाहरण विरले ही कभी पैदा होते है। जब हजारों सालों की गुलामी में लिपटा भारत इस गुलामी को अपना भाग्य समझने लगा था, जब भारतीयों की चेतना भी गुलामी की जंजीर में इस तरह जकड़ दी गयी थी कि लोग आजादी के सूरज की बात करना भी किसी चमत्कार की तरह मानते थे। ऐसे समय में इस भारत में स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की अगुवाई में धर्म और देश बचाने को एक आंदोलन खड़ा हुआ जिसे लोगों ने आर्य समाज के नाम से जाना। इसी आन्दोलन के सिपाही भारत मां के एक लाल का नाम था स्वामी श्रदानंद जिसने स्वामी दयानन्द जी महाराज से प्रेरणा लेकर आजादी की मशाल लेकर चल निकला गुलामी के घनघोर अंधेरे में आजादी का पथ खोजने। तब गांधी जी ने कहा था की आर्यसमाज हिमालय से टकरा रहा हैं, वो हिमालय था कई हजार साल का पाखंड और हजारों साल की गुलामी। लेकिन चट्टानों से ज्यादा आर्यसमाज के हौसले कहीं ज्यादा बुलंद निकले।

सन् 1856 को पंजाब के जालंधर जिले के तलवन गांव में जन्मे मुंशीराम 'स्वामी श्रद्धानंद' के निराशापूर्ण जीवन में आशा की क्षीण प्रकार रेखा उस समय उदय हुई, जब बरेली में उन्हें स्वामी दयानन्द का सत्संग मिला। स्वामी जी के गरिमामय चरित्र ने उन्हें प्रभावित किया, उस समय जहां

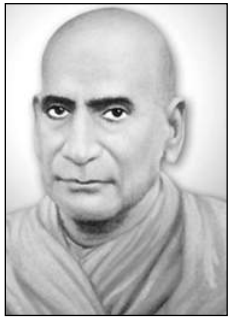

जन्म 13 फरवरी पर विशेष

भारतवर्ष के अधिकतर नवयुवक सिवाय खाने-पीने, भोगने और उसके लिए धनसंचय करने के अलावा अपना कुछ और कर्तव्य ना समझते थे गुलामी में जन्म लेते थे और उस दासता की अवस्था को अपना भाग्य समझकर गंदगी के कीड़ों की तरह उसी में मस्त रहते थे। जिस समय लोग राजनैतिक और धार्मिक दासता का शिकार थे, दुर्व्यसनों में लीन थे उस समय स्वामी श्रद्धानन्द जी ने लोगों को आत्मचिंतन, राष्ट्रचिन्तन करना सिखाया। स्वामी जी के एक-एक कथन क्रांतिकारियों के लिए गीता बनते चले गये।

देश को राजनौतिक परतंत्रता से मुक्त कर स्वामी जी का उद्देश्य धार्मिक था। ताकि हम धार्मिक रूप से भी स्वतंत्र हो, हिन्दू समाज में समानता उनका लक्ष्य था। जातिवाद, छुआछूत को दूर कर शिक्षा एवं नारी जाति में जागरण कर वह एक महान समाज की स्थापना करना चाहते थे, जो की गुलाम भारत में बहुत कठिन काम था। छोटे बड़े छूत-अछूत का भाव लोग वानरी के मृत बच्चे की तरह चिपकाए घूम रहे थे। 11 फरवरी 1923 को भारतीय शुद्धि सभा की स्थापना करते समय स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा शुद्धि आंदोलन आरम्भ किया गया। स्वामी जी द्वारा इस अवसर पर कहा गया की जिस धार्मिक अधिकार से मुसलमानों को तब्लीग और तंजीम का हक हैं उसी अधिकार से उन्हें अपने बिछुड़े भाइयों को वापस अपने घरों में लौटाने का हक हैं। आर्यसमाज ने 1923 के अंत तक 30 हजार मलकानों को शुद्ध कर दिया। लेकिन 23 दिसम्बर 1926 को शुद्धि कार्य से रुष्ट होकर मुसलमानों ने स्वामी श्रदानंद की हत्या कर दी तो गांधी जी ने हत्यारे अब्दुल रशीद को भी अपना भाई बताया।

आर्यसमाज की ओर से इस संबंध में पत्र लिखे गए, जिनका वर्णन पंडित अयोध्याय प्रसाद जी बीए द्वारा लिखित 'इस्लाम कैसे फैला' में किया गया हैं पर गांधीजी हठ पर अड़े रहे और अहिंसा की अपनी परिभाषा बनाते रहे। जबकि सावरकर ने रत्नागिरी के विट्ठल मंदिर में हुई शोक सभा में कहा- 'पिछले दिन, अब्दुल रशीद नामक एक धर्मांध मुस्लमान ने स्वामी जी के घर जाकर उनकी हत्या कर दी। स्वामी श्रद्धानन्द जी हिन्दू समाज के आधार स्तम्भ थे, उन्होंने सैकड़ों मलकाना राजपूतों को शुद्ध करके पुनः हिन्दू धर्म में लाया था। वे हिन्दू सभा के अध्यक्ष थे, यदि कोई घमंड में हो के स्वामी जी के जाने से सारा हिन्दुत्व नष्ट होगा, तो उसे मेरी चुनौती हैं, जिस भारत माता ने एक श्रद्धानन्द का निर्माण किया, उसके रक्त की एक बूंद से लाखों तलवारें तथा तोपें हिन्दू धर्म को विचलित कर न सकी, वह एक श्रद्धानन्द की हत्या से नष्ट नहीं होगा बल्कि अधिक पनपेगा।

■■ **विनय आर्य**

महर्षि स्वामी दयानन्द की दृढ़ता

लाहौर के अंदर महर्षि दयानन्द जी का व्याख्यान चल रहा था। एक बार एक शिव मंदिर में ठहरे। उसमें अच्छी लंबी चौड़ी जगह देखकर महर्षि दयानंद जी के शिष्यों ने मंदिर के पुजारी से कहा कि स्वामी जी के व्याख्यान यहीं हो जाए तो अच्छा है! पुजारी प्रसन्न होकर बोले कि बहुत अच्छा रहेगा। मैं स्वामी जी के लिए ठहरने की उचित व्यवस्था किए देता हूं। सारी व्यवस्था हो गई। स्वामी जी ने वहीं भोजन किया और रात्रि को व्याख्यान हुआ, जिसमें लगभग 20,000 लोग उपस्थित थे। स्वामी जी ने उस दिन अपने व्याख्यान में मूर्ति पूजा का जोरदार खंडन किया। मंदिर में रहने वाले साधु और पुजारी सभी दंग रह गए!

सोचने लगे कि यह तो बहुत विचित्र साधु है। हमने इसकी भरपूर सेवा की और यह तो हम पर ही कुल्हाड़ी चला रहा है। सब मंदिर वाले नाराज हो गए और फैसला कर लिया कि कल से इस साधु के व्याख्यान यहां नहीं होने देंगे।उस दिन स्वामी जी के व्याख्यान में मुसलमान भी थे। वे मूर्ति पूजा के खंडन को सुनकर बहुत प्रसन्न हो रहे थे। अगले दिन जब पुजारी ने मना कर दिया तो स्वामी जी के शिष्य जगह तलाश करने लगे। तभी एक मुसलमान वहां आया और बोला कि आज का व्याख्यान हमारे यहां करवाओ और स्वामी जी के ठहरने की पूरी व्यवस्था मैं कर देता हूं। सब ने उसकी बात को स्वीकार करके स्वामी जी की अनुमति ले ली !

रात को जब व्याख्यान हुआ तो लगभग 30,000 लोग इकट्ठे थे। उस दिन वहां मुसलमानों की संख्या बहुत अधिक थी। स्वामी जी ने अपने व्याख्यान में कुरान की पोल खोलनी शुरू कर दी और मुसलमानों को पूरी तरह नंगा कर दिया। मुसलमानों के कान खड़े हो गए। वे कहने लगे कि इसे कुरान की धज्जियां उड़ाने को तो हमने नहीं बुलाया। हमने तो बहुदेवतावाद और पत्थर पूजा पर बोलने को बुलाया था। परंतु यह तो बिल्कुल उल्टा हो रहा है। इसे रोको और व्याख्यान बंद कराओ। परंतु स्वामी जी को रोके कौन बिल्ली के गले में घंटी कौन बांधे?

स्वामी जी का व्याख्यान चलता रहा और पूरे तीन घंटे तक चला। जनता चुपचाप बैठी थी। एक भी आदमी हिला नहीं। स्वामी जी ने अपनी वाणी को विराम दिया और मंच से उतरे तो वही आदमी जो स्वामी जी को अपने यहां लाया था और सारी व्यवस्था की थी। वह हाथ जोड़कर बोला कि स्वामी जी मुझे तो आपने कहीं का भी नहीं छोड़ा। सब मुसलमान मुझसे नाराज हैं कि यह किसको बुला ले आया? उस समय स्वामी जी के पास हजारों की भीड़ थी। स्वामी जी के दर्शन के लिए लोग खड़े थे।

वह सब भी इस प्रतीक्षा में थे कि स्वामी जी इस मुसलमान की बात का क्या उत्तर देते हैं? स्वामी जी ने कहा कि भाई तुम्हें मेरे व्याख्यान का कोई कष्ट नहीं होना चाहिए। मैं जिसका अन्न खाता हूं तो उसके बदले में उसका हित अवश्य करता हूं। कल मैंने मंदिर वालों का अन्न खाया तो उनको सच्चा रास्ता दिखा कर उनका उपकार करना आवश्यक था और आज आपका अन्न खाया तो आपको सच्चा रास्ता दिखाना आवश्यक था। मैंने कुछ गलत कहा हो तो बताओ?

स्वामी जी का उत्तर सुनकर सब लोग चुपचाप चले गए! यह थी स्वामी जी की दृढ़ता और सत्यता। वे सत्य से कभी डिगे नहीं। ऐसे थे हमारे सत्य के प्रबल समर्थक और पाखण्ड संहारक महर्षि दयानंद! सत्य से अवगत और वेदों से परिचित कराने वाले उन महान युग प्रवर्तक को बारम्बार नमन है!!

■■ **संकलन : आर्ष गुरुकुल, नोएडा**

मुन्शी प्रेमचन्द के अनमोल कथन

- अतीत चाहे जैसा हो, उसकी स्मृतियां प्रायः सुखद होती हैं।
- दुखियारों को हमदर्दी के आंसू भी कम प्यारे नहीं होते।
- मैं एक मज़दूर हूं। जिस दिन कुछ लिख न लूं, उस दिन मुझे रोटी खाने का कोई हक नहीं।
- निराशा सम्भव को असम्भव बना देती है।
- बल की शिकायतें सब सुनते हैं, निर्बल की फरियाद कोई नहीं सुनता। दौलत से आदमी को जो सम्मान मिलता है, वह उसका नहीं, उसकी दौलत का सम्मान है।
- संसार के सारे नाते स्नेह के नाते हैं, जहां स्नेह नहीं वहां कुछ नहीं है।
- जिस बंदे को पेट भर रोटी नहीं मिलती, उसके लिए मर्यादा और इज्जत ढोंग है।

○○ **लाडो कटारिया**

Maharishi Dayananda and Christianity

Article By - Sita Ram Goel

Dayananda was deeply pained by the humiliations suffered by his people which were caused by the military government's repression and debased Christian harangues against Hinduism. His first priority was to restore his people's pride in their country and their cultural heritage. Centuries of foreign invasions had sunk Hindu society into poverty, sloth and defeatism. He mounted a frontal attack on some Hindu sects and systems of thought which he held responsible for this state of affairs. Hindu orthodoxy reacted by branding him as a hireling of Christian missionaries. There were certain strains in his thought which sounded like those of the alien creed. The missionaries themselves watched him for some time, for it appeared as if he was making things easy for them.

It was a matter of principle with Maharishi Dayananda not to speak on a subject which he had not studied and understood in advance. So he listened patiently to the Christian missionaries whenever and wherever they met him. There were seven such meetings between 1866 and 1873. He met J. Robson at Ajmer in 1866. During his stay in U.P. he had talks with J. T. Scott who presented to him the Christian position on various themes as well as a copy of the New Testament. In 1870, he met Dr. Rudolf Hoernle at Varanasi. On his way to Calcutta in 1872, he met the well-known Hindu convert Lal Behari De at Mughal Sarai and exchanged notes with him on the nature of sin and salvation. He discussed the nature of God with some English and native clergymen while he was staying at Bhagalpur in the course of the same journey. By the time he reached Calcutta, the Brahmo Samaj had split into two. A minority consisting of those who wanted to retain their. Hindu identity had remained with the Adi Brahmo Samaj led by Debendra Nath Tagore and Rajnarayan Bose. The majority had walked away with Keshub Chunder Sen who had formed his Church of the New Dispensation (NababidhAna) and started dreaming of becoming the prophet of a new world religion. Dayananda saw with his own eyes how infatuation with Christ had reduced Keshub Chunder to a sanctimonious humbug and turned him into a rootless cosmopolitan. He also witnessed how Debendra Nath Tagore was finding it difficult to retrieve the ground lost when the Adi Brahmo Samaj had repudiated the fundamental tenets of Hinduism - the authority of the Vedas, VarNAshrama-dharma, the doctrine of rebirth, etc. The only consolation he found in Calcutta was a lecture, The Superiority of Hinduism, which Rajnarayan Bose had delivered earlier and a copy of which was presented to him.

Dayananda wrote a critique of Brahmoism soon after he returned from Calcutta. It was incorporated in Chapter XI of his Satyartha Prakasha which was first published from Varanasi in the beginning of 1875. The Brahmos, he wrote, have very little love of their own country left in them. Far from taking pride in their country and their ancestors, they find fault with both. They praise Christians and Englishmen in their public speeches while they do not even mention the rishis of old.

❍❍ Continue next Edition

आहिस्ता चल जिंदगी

आहिस्ता चल जिंदगी, अभी
कई कर्ज चुकाना बाकी है
कुछ दर्द मिटाना बाकी है
कुछ फर्ज निभाना बाकी है!!

रफ्तार में तेरे चलने से
कुछ रूठ गए कुछ छूट गए
रूठों को मनाना बाकी है
रोतों को हंसाना बाकी है!!

कुछ रिश्ते बनकर, टूट गए
कुछ जुड़ते -जुड़ते छूट गए
उन टूटे-छूटे रिश्तों के
जख्मों को मिटाना बाकी है!!

कुछ हसरतें अभी अधूरी हैं
कुछ काम भी और जरूरी हैं
जीवन की उलझ पहेली को
पूरा सुलझाना बाकी है!!

जब सांसों को थम जाना है
फिर क्या खोना, क्या पाना है
पर मन के जिद्दी बच्चे को
यह बात बताना बाकी है!!

आहिस्ता चल जिंदगी, अभी
कई कर्ज चुकाना बाकी है
कुछ दर्द मिटाना बाकी है
कुछ फर्ज निभाना बाकी है!!

➲ **दीपक आर्य**

रात अगर है तो उसे रात कहो, चुप न रहो।
घेर लाया है अंधेरे में हमें कौन? हफीज़।
आओ कहने की जो है बात कहो, चुप न रहो।
काम करने में कतराना नहीं, और काम करने पर
इतराना नहीं।

➲ **आचार्य चन्द्रशेखर**

महान ऋषिवर

तुमने जो फूंका मंत्र, राष्ट्र के आंगन में साकार हुआ,
तुमने जिस मिट्टी के ढेले को छुआ वही अंगार हुआ,
तुमने जो बोये बीज देश रत है उनके ही बोने में,
वेदों का ध्वज लहराता है दुनिया के कोने-कोने में,
वह अमिट रहेगा संस्कृति में तुमने जो यश विस्तारा है,
पथ-दर्शक सबका बना आज, 'सत्यार्थ प्रकाश' तुम्हारा है।।
तुम दुखी बाल-विधवाओं के भोले मुख की मुस्कान बने,
अपनाकर दलित-अछूतों को मानव से देव महान बने,
जीवन के रोते पतझर में, तुम खिला गए मधुमास नया,
अपने साहसमय कृत्यों से लिख गए एक इतिहास नया,
इस धरती का कण-कण गरिमा के गीत तुम्हारें गाएगा,
ये देश तुम्हारे उपकारों से उऋण नहीं हो पाएगा।।

ओ३म वंदना

हे ओ३म् दीजिये शक्ति, यथोचित काम सभी के आयें
दीनों पर करें दया और, जीवों को न कहीं सतायें।।

सौर जगत निर्माता स्वयं हैं, पृथ्वी जिसका हिस्सा
उसे पलक झपकते विलय कराते, यह वेदों का किस्सा।।

सब घूमें जीव स्वतन्त्र यहां, कोई परतंत्र ना हो जायें
हे ओ३म् दीजिये शक्ति, यथोचित काम सभी के आयें।।

हो भेदभाव से रहित जगत यह, ईश हमारा सपना
सब जियें यहां उस प्रेमभाव से, 'मत' हो अपना-अपना॥

दो भक्तिभाव हे परमब्रह्म, ना 'वेद' विहीन हो जायें
हे ओ३म् दीजिये शक्ति, यथोचित काम सभी के आयें॥

➲ **गिरिराज सिंह**

बस! दिमाग की थोड़ी सी खिड़की खोल दें

सुरेंद्र कुमार रैली
अध्यक्ष, पाखंड और अंधविश्वास उन्मूलन समिति, दिल्ली

जो लोग धर्म, विश्वास और आस्था का प्रश्न बनाकर अड़ जाते हैं, वह ना समझ हैं। यह सत्य है कि विश्वास एक ऐसी चीज है जिसे हम हथौड़ा मारकर तोड़ नहीं सकते। लेकिन यदि विश्वास को बदला जा सकता है तो केवल सोचने से और समझने से, बार-बार उसके विश्वास गलत कहने के बजाय आप उसके दिमाग की थोड़ी सी खिड़की खोल दीजिए ताकि वह अपने विश्वास पर शक करने लगे।

इस प्रकार के अंधविश्वास और पाखंड से लड़ने का एक मात्र उपाय इनका जमकर जबरदस्त खंडन करना ही है। जो लोग इसे अपने धर्म, विश्वास और आस्था का प्रश्न बनाकर अड़ जाते हैं, वह ना समझ हैं।

यह सत्य है कि विश्वास एक ऐसी चीज है जिसे हम हथौड़ा मारकर तोड़ नहीं सकते। लेकिन यदि विश्वास को बदला जा सकता है तो केवल सोचने से और समझने से, बार-बार उसके विश्वास गलत कहने के बजाय आप उसके दिमाग की थोड़ी सी खिड़की खोल दीजिए ताकि वह अपने विश्वास पर शक करने लगे। और जब वह स्वयं उस विषय पर सोचने और तर्क करने लगेगा तो अंततः वह स्वयं अपने विश्वास में परिवर्तन कर लेगा।

सत्य-असत्य को जानो : सभी जिज्ञासु मित्र, माताएं बहनें इस विश्लेषण के द्वारा ही समझ सकते हैं कि यह सब अंधविश्वास है। मात्र ज्योतिषियों द्वारा अपने ठगी के धंधे के लिए ही बनाया गया है इसका कोई भी वैज्ञानिक अधार नहीं है। यदि कोई त्रिकालदर्शी, डिग्रीधारी, महाज्ञानी ज्योतिषी इन सिद्धांतों को सही सिद्ध करना चाहें तो आकर आर्यसमाज में चर्चा कर सकते हैं।

आपसे एक छोटा सा अनुरोध है कि यदि आप इन तमाम तरह के अंधविश्वासों से बचना चाहते हैं, अपनी मेहनत का धन बचाना चाहते हैं, अपने परिवार के साथ सुख समृद्धि से रहना चाहते हैं, अपना अरबों वर्ष पुराना देश और धर्म बचाना चाहते हैं तो आप सच्चे हिन्दू, सनातनी, वैदिक धर्मी बनना चाहते हैं तो आइये आर्य समाज में आपका स्वागत है।

यहां ईश्वर की राह में कोई रोड़ा नहीं है। 19वीं सदी के महान समाज सुधारक महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने जहां वेद उद्धार कर सत्य की राह दिखाई, वहीं सम्पूर्ण भारत वर्ष में भ्रमण कर देश, समाज में फैले पाखंड, कुरीतियों, भ्रमों, भ्रांतियों व अंधविश्वास से ग्रसित देशवासियों की दयनीय दशा को देखा और दृढ़ संकल्प के साथ पाखण्डों का खंडन करने हेतु एक ज्वलंत पताका फहराई थी अब हम सब मिलकर एक भय मुक्त अंधविश्वास रहित राष्ट्र व समाज के निर्माण में आर्यसमाज के माध्यम से सहयोगी बने। आर्य समाज में आपका स्वागत है। ■■

'विद्या दान सबसे बड़ा दान है'

आर्ष गुरुकुल, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा "आर्ष गुरुकुल शिक्षा प्रबंध समिति (पं)" द्वारा संचालित वैदिक शिक्षा का उत्कृष्ट केंद्र, आर्य समाज बी-69, सेक्टर-33, नोएडा में स्थापित पिछले 27 वर्षों से ब्रह्मचारियों को विद्वान बना रहा है। जो आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में सहयोग कर रहे हैं। इस समय 108 ब्रह्मचारी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। आर्ष गुरुकुल के प्रधानाचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार के नेतृत्व में दिन-रात चौगुनी उन्नति की ओर अग्रसर गुरुकुल को सहयोग देकर 'विद्या दान सबसे बड़ा दान है' में सहयोगी बनें। संस्था में निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था है। केवल भोजन शुल्क ही लिया जाता है। कृपया उदार हृदय से आप सहयोग 'यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया', नोएडा सेक्टर-33 में खाता संख्या A/C No. 1483010112345, IFSC- UTB10SCN560 में भेजकर सूचित करें ताकि आपको पावती (रसीद) भेजी जा सके। 'आर्ष गुरुकुल को दी जाने वाली राशि आयकर की धारा 80जी के अंतर्गत कर मुक्त है।' धन्यवाद!

(आर्य कै. अशोक गुलाटी)
प्रबंध संपादक, 'विश्ववारा संस्कृति', मो. : 9871798221, 7011279734
उपप्रधान, आर्य समाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा

समाज में सकारात्मक चिंतन का महत्व

आर्य भूपाल शर्मा, एमए, साहित्यरत्न
कौशांबी, गाजियाबाद

ऋग्वेद के मंत्र में एक ऋचा का उल्लेख मिलता है कि 'सा प्रथमा विश्ववारा संस्कृति धारयते' अर्थात भारतीय संस्कृति ही एक मात्र वह पहली संस्कृति है जिसने विश्व की अनेक संस्कृतियों का प्रतिनिधित्व किया। इसी संस्कृत ने विश्व वसुधा के लिये सर्वप्रथम जीवन के सनातन स्वरों का गान किया और यहीं से वसुधैव कुटुम्बकम की महान भावना ने जन्म लिया।

हमारी भारतीय संस्कृति की परम्पराए केवल कहने के लिए ही समृद्ध नहीं थी अपितु यह हमारे राष्ट्र, समाज, परिवार के सदस्यों एवं नागरिकों के अपने आपसी संबंधों को भी समृद्ध करती है। विपरीत परिस्थितियां हर व्यक्ति के जीवन में कभी न कभी आती ही हैं और ऐसे में हमारा आत्मविश्वास सूखे रेत की भांति मुट्ठियों से फिसलने लगता है। चारों ओर अंधकार ही अंधकार नजर आता है। ऐसे में जो सकारात्मक चिंतन से संघर्ष करता हुआ साहस जुटा लेता है वह ही प्रतिकूल परिस्थितियों पर विजय करने में सफलता प्राप्त कर लेता है।

सकारात्मक चिंतन करने वाले व्यक्ति समस्याओं के विषय में नहीं अपितु उनके समाधान के विषय में सोचते हैं। सकारात्मक चिंतन से आत्मविश्वास बढ़ता है तथा आत्मविश्वास से हमें अलौकिक बल की अनुभूति होती है और हमें कुछ कर गुजरने का साहस प्राप्त होता है और हम असम्भव कार्य को भी करने में सफल होते हैं।

संघर्ष जीवन का दूसरा नाम है। संघर्ष के समय हमारी आंतरिक शक्तियां एवं क्षमताओं की एक जुटता ही जीवन की सफलता को सुनिश्चित करती हैं लेकिन इससे पूर्व यह सुनिश्चित करना अनिवार्य है कि संघर्ष के क्षण हमारे व्यक्तित्व की आंतरिक शक्ति सामर्थ्य एक जुट, एकाग्र और स्थिर बनी रहे किन्तु यह तभी सम्भव है जब हमारा चिंतन सकारात्मक बना रहे।

सकारात्मक चिंतन ही केवल और केवल सफल और सुखद जीवन का आधार माना गया है, पुनश्च: समाज में इतनी अधिक नकारात्मकता देखने को मिलती है कि इससे बच पाना असंभव सा हो जाता है। अत: जब तक हम सकारात्मकता से नहीं जुड़ेंगे तब तक नकारात्मकता के प्रभाव से नहीं बच सकते। सकारात्मकता से जुड़ने का सबसे अच्छा और सरल उपाय है स्वाध्याय एवं सत्संग करना।

नकारात्मक चिंतन हमें निर्बल, कायर, असमर्थ तथा पलायनवादी प्रवत्ति की ओर ले जाता है। हम एक भ्रम और भय की परिस्थिति में चक्कर काटते रहते हैं, हमारी आंतरिक क्षमता विखंडित हो जाती है। इतना ही नहीं हमारा व्यक्तित्व बिखर जाता है और जीवन मे आने वाले संघर्षों का सामना करना दुष्कर हो जाता है तथा किसी भी समस्या का सामना करना हमारे लिये मात्र एक स्वप्न बन कर रह जाता है।

सद्ग्रंथ हमारी नकारात्मकता को दूरकर सकारात्मक ऊर्जा का संचार हमारे जीवन में करते हैं। स्वाध्याय से हमें श्रेष्ठ महापुरुषों के सद्विचारों से सहज प्रेरणा प्राप्त होती हैं। आभास होता है कि कोई महापुरुष हमें कुमार्ग से हटाकर सद्मार्ग पर चलने को प्रेरित करने के आशय से हमारे हाथ को कस कर पकड़े हुए हैं और एक प्रति विषमताओं में हमें सकारात्मक सोच रख संघर्ष कर सफलता प्राप्त करने की सहज प्रेरणा प्रदान करती है।

समाज में प्राय: सभी प्रकार के लोग रहते हैं किंतु जिस समाज में अधिकांश अच्छे लोग रहते हैं जो अपनी सकारात्मक शक्ति अथवा अच्छी सोच को समाज को आगे बढ़ाने में लगाते हैं, समाज में समरसता बनाये रखते हैं, प्रीतिपूर्वक सबसे व्यवहार करते हैं, बुरे लोगों को भी निभा लेते हैं उन्हें अपने साथ लेकर चलते हैं, उसे सभ्य समाज कहा जाता है।

सकारात्मक चिंतन वाले व्यक्ति कभी भी किसी समस्या को ऐसा नहीं मानते जिससे वे हताश होकर अपने जीवन से कुंठित हो जाये अथवा अपने जीवन से ऊब जाए। उनकी सोच सदैव यही बनी रहती है कि कुछ भी असम्भव नही है। जो वे बनना चाहते हैं बनने का प्रयास करते है और अंतत: उन्हें सफलता प्राप्त हो जाती है। स्वामी दयानन्द जी ने कहा है, जागो, उठो और तब तक लक्ष्य की प्राप्ति हेतु लगे रहो, जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न कर लो। सकारात्मक चिंतन वाले व्यक्ति सर्वदा किसी भी चैलेंज को स्वीकार करने के लिए तैयार रहते हैं और उसे पूरा भी करते हैं। ○○

समाचार - सूचनाएं

- 12 फरवरी स्वामी महर्षि दयानन्द सरस्वती के 196वें जन्म दिवस पर ज्ञान ज्योति महोत्सव बड़ी धूमधाम से गांधीधाम, कच्छ में मनाया गया। जिसके मुख्य अतिथि मान्यवर श्री आचार्य देवव्रत जी, राज्यपाल गुजरात रहे।
- 16 फरवरी महर्षि दयानन्द के 196वें जन्म दिवस के अवसर पर आर्ष कन्या गुरुकुल, वेदधाम सोरखा, सेक्टर-115, नोएडा का भव्य समारोह 'नारी सशक्तिकरण दिवस' के रूप में मनाया गया। जिसमें 30 नारियों को उनकी भिन्न-भिन्न प्रतिभाओं के लिए सशक्त महिला सम्मान से नवाजा गया। समारोह के मुख्य अतिथि श्री रवि कालरा, श्री प्रकाश रहे व अध्यक्षता एमेटी संस्थान के निदेशक श्री आनंद चौहान सपत्नी उपस्थित थे। समारोह बड़ा ही सफल रहा।
- 18 फरवरी को महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव के अवसर पर विशाल भजन संध्या का आयोजन गाजीपुर गौ संवर्धन केंद्र दिल्ली पर किया गया। KAYP के द्वारा सांसद श्रीमती मीनाक्षी लेखी के निवास पर महर्षि जन्मोत्सव का भव्य आयोजन किया गया।
- 21 फरवरी को रामलीला मैदान, नई दिल्ली में भव्य ऋषि मेले का आयोजन किया गया। शिवरात्रि के अवसर पर ऋषि बोधोत्सव मनाया गया व वक्ताओं द्वारा ऋषि को भावभीनी श्रद्धांजलि दी गई।
- 21 फरवरी को महाशिवरात्रि व बोधोत्सव के अवसर पर भजनों का विशेष कार्यक्रम आर्यसमाज, आर्ष गुरुकुल नोएडा में मनाया गया।
- 23 फरवरी को आर्य समाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा में शिवरात्रि के अवसर पर भव्य ऋषि बोधोत्सव के रूप में मनाया गया। बृहद यज्ञ के पश्चात धर्मराक्षता शास्त्री के मधुर भजन, ब्रह्मचारियों द्वारा लघु नाटिका, महर्षि के संस्मरण द्वारा जनमानस को ऋषि द्वारा किये उपकारों से स्मरण कराया गया उसके बाद भव्य ऋषि लंगर का आयोजन किया गया।
- 4 मार्च राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस। 5 मार्च स्वामी विद्यानन्द विदेह देहांत। 6 मार्च पं लेखराम बलिदान दिवस। 8 मार्च अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस। 10 मार्च स्वामी सर्वानन्द देहात। 19 मार्च पं. गुरुदत्त विद्यार्थी पुण्यतिथि। 22 मार्च विश्व जल दिवस। 23 मार्च शहीद भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव बलिदान दिवस।

विनम्र श्रद्धांजलि...

- पिछले दिनों श्री धर्मपाल आर्य जी चाचा डॉ. जयेन्द्र कुमार प्रधानाचार्य आर्ष गुरुकुल नोएडा व चाची श्रीमती

रामकली जी का स्वर्गवास हो गया था। वह एक वैदिक विचारक अनेक आर्यसमाज, गुरुकुलों के पोषक व पूर्व प्रधानमंत्री चौ. चरण सिंह के सहयोगी रहे। उनकी प्रार्थना सभा वीतराग स्वामी विवेकानंद जी की अध्यक्षता में उनके पैत्रिक गांव में 24-2-2020 को सम्पन्न हुई। जहां श्री माया प्रकाश त्यागी, डॉ. वीरपाल विद्यालंकार, श्री बृहस्पति जी, यज्ञमुनि जी, डॉ. पवित्रा, आर्य समाज के अधिकारी, सदस्य, ब्रह्मचारीगण, वानप्रस्थी, गुरुकुल के आचार्य और अनेक समाजों के अधिकारी व गणमान्य लोगों द्वारा श्रद्धासुमन अर्पित किये गये।

- पिछले दिनों पंजाब केसरी के संपादक श्री अश्वनी चोपड़ा निर्भीक कलम योद्धा, पूर्व लोकसभा सदस्य का 63 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आर्यसमाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा के सभी सदस्यों, अधिकारियों की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि!!
- श्री तिलकराज कपूर जी आर्ष गुरुकुलों के सहयोगी का स्वर्गवास हो गया। परमात्मा से आत्मा की शांति की विनम्र प्रार्थना एवं श्रद्धांजलि।
- ब्रह्मचारी नंदकिशोर जी आर्यसमाज के सजग प्रहरी, ऋषि दयानन्द मिशन के सच्चे सिपाही, प्रचारक, जो नि:स्वार्थ भावना से कार्य करते हुए अपना जीवन समर्पित किया। ऐसे आर्यसमाजी के निधन पर आर्यसमाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा के सभी सदस्यों, अधिकारियों की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि!!

- प्रबंध सम्पादक

घोषणा (फार्म नं.4) नियम-8

1.	समाचार पत्र का नाम	:	विश्ववारा संस्कृति
2.	प्रकाशन का स्थान	:	आर्यसमाज, बी–69, सेक्टर–33, नोएडा, गौतमबुद्धनगर, उ.प्र.
3.	प्रकाशन की अवधि	:	मासिक
4.	मुद्रणालय का नाम व पता	:	वत्स ऑफसेट, मुद्दा हाउस, सी–ब्लॉक, बारातघर, चौड़ा रघुनाथपुर, सेक्टर–22, नोएडा, गौतमबुद्धनगर, उ.प्र.
	राष्ट्रीयता	:	भारतीय
5.	स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक	:	डॉ. जयेन्द्र कुमार
	राष्ट्रीयता	:	भारतीय
	पता	:	आर्यसमाज, बी–69, सेक्टर–33, नोएडा, गौतमबुद्धनगर, उ.प्र.
6.	सम्पादक	:	डॉ. जयेन्द्र कुमार
	राष्ट्रीयता	:	भारतीय
	पता	:	आर्यसमाज, बी–69, सेक्टर–33, नोएडा, गौतमबुद्धनगर, उ.प्र.

मैं डॉ. जयेन्द्र कुमार एतद्द्वारा घोषणा करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य है।

(डॉ. जयेन्द्र कुमार)
सम्पादक

आर्ष गुरुकुल, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा

आर्य समाज नोएडा का प्रकल्प

प्रवेश-सूचना

गुरुकुल में नवीन सत्र 2020-21 के लिए अप्रैल 2020 में प्रवेश आरम्भ हो रहे हैं। प्रवेश के इच्छुक विद्यार्थी की आयु 10 वर्ष (5वीं पास) होना चाहिए। पाठ्यक्रम गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार एवं उ.प्र.मा.सं.शि. परिषद, लखनऊ एवं सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी से सम्बन्धित होगा। आवासीय गुरुकुलीय दिनचर्या, शारीरिक एवं बौद्धिक विकास के लिए आसन, प्राणायाम, व्यायाम, खेलकूद तथा शुद्ध शाकाहारी भोजन, गाय के दूध की व्यवस्था।

प्रवेश शुल्क : 5100/- रु., भोजन शुल्क : 1500/- रु. प्रतिमाह, शिक्षा निःशुल्क

विद्यालय की नियमावली एवं प्रवेश पत्र प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें-
सम्पर्क सूत्र : 0120-2505731, 9899349304, 9871798221

लिखित परीक्षा : 30 अप्रैल 2020, प्रातः - 10 बजे

पिछली पास कक्षा का व आयु का प्रमाण पत्र, 2 फोटो साथ लाएं

सिफारिश को अयोग्यता माना जायेगा

साक्षात्कार लिखित परीक्षाएं उत्तीर्ण होने पर होगा

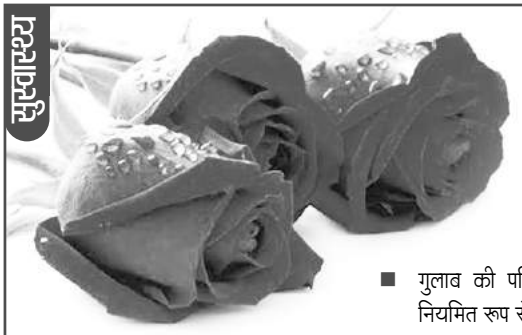

फूलों का जादुई असर
फ्लॉवर थैरेपी

बसंत के आगमन के साथ ही फूल खिलने लगे हैं और खेतों में पीले-पीले सरसों के फूल लहराने लगे हैं। प्रकृति के नए श्रृंगार के साथ ही वासंती बयार भी बहने लगी है। वहीं फूल न केवल हमारे वातावरण को महकाते हैं, बल्कि इनके जरिए कई तरह की शारीरिक, मानसिक और सौंदर्य समस्याओं को हल किया जा सकता है। जी हां, फूलों से हर समस्या का समाधान संभव है, फ्लॉवर थैरेपी द्वारा।

- गुलाब की पत्तियों को दूध में उबालकर नियमित रूप से पीने पर, कब्ज की समस्या समाप्त हो जाती है और इससे सौंदर्य में भी वृद्धि होती है। गुलाब की पत्तियों को दूध में पीसकर चेहरे पर लगाने से निखार आता है, और होंठों को गुलाबी करने के लिए भी इसका प्रयोग किया जाता है।
- सूरजमुखी के फूलों को नारियल तेल में मिलाकर कुछ दिनों तक धूप में रखें। अब इस तेल का प्रयोग शरीर की मालिश के लिए करें। इस प्रयोग से त्वचा संबंधी रोग समाप्त हो जाते हैं।
- दांत दर्द या मसूढ़ों में सूजन होने पर जूही के पत्तों को चबाकर, देर तक इसका रस मुंह में रहने दें और कुछ समय बाद थूक दें। ऐसा करने से दांत संबंधी सभी बीमारियां खत्म हो जाती हैं।

- गुड़हल के लाल फूलों का प्रयोग डाइबिटीज और हार्ट संबंधी समस्याओं में किया जाता है। इसके लिए इसे पीसकर मिश्री के साथ खाने से लाभ होता है। इसके अलावा महिलाओं के मासिकधर्म की समस्या में भी यह कारगर उपाय है। साथ ही नारियल तेल में इस फूल को डालकर रखने पर इस तेल का प्रयोग बालों को काला और चमकदार बनाने में किया जाता है।

- चंपा, चमेली और जूही के फूलों को नारियल के तेल में उबालकर रखें। अब इस तेल से शरीर की मालिश करें। इससे शरीर में चुस्ती बनी रहती है। साथ ही इस तेल को बालों में लगाने से बाल काले और मुलायम बने रहते हैं।
- मुंह में छाले हो जाने या छिल जाने पर चमेली की पत्तियों का प्रयोग किया जाता है। चमेली की पत्तियों को चबाने से मुंह के छाले बहुत जल्दी ठीक हो जाते हैं। इसके अलावा सुबह के समय चमेली के फूलों को आंखों पर रखने से आंखों की रौशनी बढ़ती है।

- सौ ग्राम गेंदे के फूल लेकर बीज वाले हिस्से को बारीक काट लें। अब इसे सौ ग्राम शक्कर और 500 मिली पानी के साथ पकाएं। इस प्रयोग से शरीर में ताकत आती है और ताजगी बनी रहती है।
- ब्राह्मी-ब्राह्मी दिमाग को शीतलता प्रदान करने में, याददाश्त बढ़ाने में व अनिद्रा दूर करने में वैदिक काल से सफल औषधी हैं।